Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الرَّسُوْلُ بِالْحَقِّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَاٰمِنُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ (सूरत अन्निसा आयत :171)

अनुवाद: हे लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से हक़ के साथ रसूल आ चूका है। अत: ईमान ले आओ यह तुम्हारे लिए बेहतर होगा। फिर भी यदि तुम इंकार करो तो निसंदेह अल्लाह ही का है जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 6
अंक- 11-12

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR HINDI Qadian

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

4-11 शअबान 1442 हिज्री कमरी 18-25 आमान 1400 हिज्री शम्सी 18-25 मार्च 2021 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

इन्सान अधिकतर बातों में झगड़ता है

(1127) हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक रात उनके और हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास जो नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बेटी थीं, आए और फ़रमाया : क्या तुम दोनों (तहज्जुद की) नमाज़ नहीं पढ़ते हो? मैं ने कहा : हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ! हमारी जानें अल्लाह तआला के हाथ में हैं जब हमें उठाना चाहे हमें उठाता है। जब मैं ने यह कहा तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम लौट गए और मुझे कुछ जवाब नहीं दिया। फिर मैं ने जबकि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पीठ मोड़ कर अपनी रान पर हाथ मारते हुए जा रहे थे, आप को यह कहते सुना : इन्सान अधिकतर बातों में झगड़ा करता है।

रमज़ान में बाजमाअत नफ़्ल नमाज़

(1129) हज़रत आयशा उम्मुल मोमेनीन रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक रात मस्जिद में नमाज़ पढ़ी। लोगों ने भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अनुसरण में नमाज़ पढ़ी। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दूसरी रात भी पढ़ी और लोग बहुत हो गए। फिर तीसरी या चौथी रात को भी इकट्ठे हुए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उनके पास बाहर नहीं गए। जब सुबह हुई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : मैं ने देख लिया था जो तुम करते थे और मुझे तुम्हारे पास बाहर आने से इसी बात ने रोका है कि मैं डर गया कि कहीं तुम पर (तहज्जुद) फ़र्ज़ हो जाए और यह वाक़िया रमज़ान में हुआ।

(सही बुख़ारी, जल्द 2 किताब तहज्जुद, प्रकाशन क़ादियान 2006)

इन्सान की बड़ी ख़ुशी जो ज़वाल पज़ीर नहीं होती और संकट के समय उसे सँभाल लेती है वह ख़ुदा पर भरोसा है

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

5 जनवरी 1899 ई

मोहरे नबुव्वत की वास्तविकता

सुबह की नमाज़ के बाद मौलवी क़ुतुबुद्दीन साहिब साकिन बद्दोमलही ने प्रश्न किया कि

"रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दोनों मुबारक कन्धों के मध्य जो मोहरे नबुव्वत बताई जाती है और कहते हैं कि रसौली की तरह थी। इस की वास्तविकता क्या है ?"

फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मोहरे नबुव्वत के बारे में जो आरोप लगाया जाता है। हमारे विचार में यह मूल बात नहीं है परन्तु में यह बात अपने सच्चे जोश और श्रद्धा से कहता हूँ कि मेरा विश्वास यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के किसी नबुव्वत के चिन्ह को रसौली इत्यादि शब्दों से तुलना देना एक मोमिन और सच्चे मुसलमान का काम नहीं। यह गुस्ताख़ी और शोख़ी है जो कुफ़्र की सीमा तक पहुंच जाता है। हमको ऐसे मामलों में ज़्यादा छानबीन और अनुसन्धान की ज़रूरत नहीं कि वह मोहरे नबुव्वत क्या थी? और कैसी थी? क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नबुव्वत के सत्यापन में अल्लाह तआला ने असंख्या स्पष्ट तथा खुले खुले निशान रखे थे। उनमें से एक मोहरे नबुव्वत भी थी

असल बात यह है कि चूँकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वजूद से अन्बिया अलैहिमुस्सालम को ऐसी ही तुलना है जैसी कि हिलाल(पहली रात के चन्द्रमा) को बदर (चौदहवीं रात के चन्द्रमा) से होती है। हिलाल का वजूद एक अन्धेरे में होता है परन्तु जब वह अपनी पूर्णता को पहुंच कर बदर बन जाता है तो वह बदर अपनी पहली अवस्था हिलाल का बताने वाला और सत्यापित करने हो जाता है। अत: निसन्देह समझो कि यदि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम न आते तो पहले नबी और उनकी नबुव्वतों के पहलू छुपे रहते।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मसीह अलैहिस्सलाम पर उपकार

अब सोचो और बताओ कि क्या मौजूदा इंजीलों से इंसान तौहीद के तरीक़ा का पता लगा सकता है। कैसी हैरान करने वाली बात है कि ख़ुदा तआला का नबी उसकी तौहीद को स्थापित करने के लिए आया करता है या अपनी ख़ुदाई मनवाने? अत: अब मौजूदा इंजील ने यही नहीं कि तौहीद के तरीक़

शेष पृष्ठ 1 पर

अपनी जमाअत के लोगों पर एक हद तक जबर (बलप्रयोग) हो सकता है, उदाहरणता यदि कोई अहमदी नमाज़ें छोड़ बैठता है तो चूँकि इससे सारी जमाअत की बदनामी होती है इस लिए हमारा हक़ है कि उस व्यक्ति को इस्लाह के लिए विवश करें

وَاِنۡ کَذَّبُوۡکَ فَقُلۡ لِّیۡ عَمَلِیۡ وَلَکُمۡ عَمَلُکُمۡ ۚ اَنۡتُمۡ بَرِیۡٓـُٔوۡنَ مِمَّاۤ اَعۡمَلُ وَاَنَا بَرِیۡٓءٌ مِّمَّا تَعۡمَلُوۡنَ

सूरत यूनुस आयत 42 की तफ़सीर में सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

यदि तुम मेरी तक़ज़ीब करते हो और मुझे झुठलाते हो तो निसंदेह ऐसा करो क्योंकि तुम में और मुझ में मतभेद है। तुम अलग कार्य कर रहे हो और मैं अलग कार्य कर रहा हूँ। और मतभेद की अवस्था में हर प्रतिद्वन्द्वी को हक़ है कि दूसरे की बात को ग़लत साबित करने की कोशिश करे। लेकिन बात उसी हद तक ही रहनी चाहीए। एक दूसरे को उसकी इच्छा के विरुद्ध अपनी बात मनवाने पर विवश नहीं करना चाहीए। इसलिए जब मैं तुम्हें मजबूर नहीं करता तो तुम मुझे क्यों मजबूर करते हो।

पहली आयत में जो اَعۡلَمُ بِالۡمُفۡسِدِیۡنَ कहा था इस आयत में इसी की तरफ़ इशारा किया है और बताया है कि जब तुम्हारी जमाअत अलग और हमारी जमाअत अलग, तुम्हारे काम अलैहदा और हमारे काम जुदा, और हर एक इस बात को जानता है तो फिर झगड़े और बलप्रयोग तक स्थिति क्यों पहुंचाई जाए। क्योंकि बलप्रयोग तो उस अवस्था में हो सकता है जबकि एक की वजह से दूसरे पर हर्फ़ आता हो, लेकिन इस जगह मेरे या मेरी जमाअत के कामों की वजह से तुम पर कोई हर्फ़ नहीं आ सकता, और तुम्हारे कामों की वजह से मुझ पर

शेष पृष्ठ 16 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

पृष्ठ 1 का शेष

को गुम कर दिया है बल्कि साथ ही हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की रिसालत और नबुव्वत को उड़ा दिया है और तहां वह ख़ुदा या ख़ुदा के बेटे बनते। उनको नबी के दर्जे से भी गिरा कर अल्लाह की पनाह बहुत बुरे दर्जे का आदमी बना दिया परन्तु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र हस्ती ने आकर उनकी शिक्षा को ज़िन्दा किया और स्वयं मसीह की अपनी ज़ात और वजूद के लिए मसीहाई की कि उस को मर्दों से निकाल कर इस ज़िन्दगी में दाख़िल किया जो अल्लाह तआला के चुने हुए बंदों और रसूलों को दी जाती है।

इस्लाम की महानता

शिक्षा वही सम्पूर्ण हो सकती है जो इन्सानी शक्तियों को सम्पूर्ण रूप से परिपूर्ण करने वाली और सामर्थ्य प्रदान करने वाली हो। न यह कि एक ही पहलू पर स्थित हो। इंजील की शिक्षा को देखो कि वह क्या कहती है और इसके मुक़ाबला पर शक्तियां क्या शिक्षा देती हैं? इन्सानी शक्तियां और फ़ित्रत ख़ुदा तआला की व्यावहारिक किताब है। अत: उसकी कथनीय किताब जो किताबुल्लाह कहलाती है या उसे इलाही शिक्षा कहो। इस की साख़त और बनावट के विरुद्ध और विपरीत कैसे होगी। इसी तरह पर यदि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम न आते तो पिछले नबियों के आचरण ,हिदायतें, चमत्कार और क़ुव्वते क़ुदसिया पर आरोप होते परन्तु हुज़ूर ने आकर उन सबको पवित्र ठहराया। इस लिए आपकी नबुव्वत के निशान सूर्य से अधिक प्रकाशित हैं और असंख्य और अनगिनत हैं। अत: आपकी नबुव्वत या नबुव्वत के निशानों पर एतराज़ करना ऐसा ही है जैसे कि दिन चढ़ा हुआ हो और कोई मूर्ख अन्धा कह दे कि अभी तो रात ही है। मैं फिर कहता हूँ कि दूसरे धर्म अन्धेरे ही में रहते यदि अब तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम न आते। ईमान तबाह हो जाता और ज़मीन लअनत और इलाही अज़ाब से तबाह हो जाती। इस्लाम शम्मा की तरह प्रकाशित है जिसने दूसरों को भी अन्धेरे से निकाला है। तौरेत को पढ़ो तो स्वर्ग और नर्क का पता ही मिलना मुश्किल हो जाता है। इंजील को देखो तो तौहीद का निशान ही नहीं मिलता। अब बतलाओ कि इस में तो शक नहीं कि ये दोनों किताबें अल्लाह तआला ही की तरफ़ से थीं और हैं। परन्तु उनमें कौन सी रोशनी मिल सकती है। सच्ची रोशनी और हक़ीक़ी नूर जो मोक्ष के लिए अभीष्ट है वह इस्लाम ही में है। तौहीद ही को देखो कि जहां से क़ुरआन को खोलो वह एक नंगी तलवार नज़र आता है कि शिर्क की जड़ काट रहा है। ऐसा ही नबुव्वत के समस्त पहलू ऐसे साफ़ और रोशन नज़र आते हैं कि उनसे बढ़कर नहीं।

ख़त्म नबुव्वत की वास्तविकता

ख़त्म नबुव्वत को यूं समझ सकते हैं कि जहां पर तर्क और अनुभूति तिब्बी तौर पर ख़त्म हो जाते हैं वह वही सीमा है जिसको ख़त्मे नबुव्वत के नाम से पुकारा गया है। इसके बाद मुल्हिदों (नास्तिकों) की तरह आरोप लगाना बे ईमानों का काम है। हर बात में स्पष्ट चिन्ह होते हैं और उनका समझना सम्पूर्ण मार्फ़त और आंखों के नूर पर आधारित है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तशरीफ़ लाने से ईमान और इर्फ़ान की सम्पूर्णता हुई, दूसरी क़ौमों को रोशनी पहुंची। किसी दूसरी क़ौम को स्पष्ट और रोशन शरीयत नहीं मिली। यदि मिलती तो क्या वह अरब पर अपना कुछ भी प्रभाव न डाल सकती। अरब से वह सूर्य निकला कि उसने प्रत्येक जाति को प्रकाशित किया और हर बस्ती पर अपना नूर डाला। यह क़ुरआन करीम ही को गर्व प्राप्त है कि वह तौहीद और नबुव्वत के विषय में सारे संसार के धर्मों पर विजित हो सकता है। यह गर्व का स्थान है कि ऐसी किताब मुसलमानों को मिली है। जो लोग हमला करते हैं और इस्लाम की शिक्षा तथा हिदायत पर आरोप लगाते हैं वह बिलकुल झूठ और बेईमानी से बोलते हैं।

एक से अधिक विवाह की आज्ञा

जैसे एक से अधिक विवाह पर आरोप लगाते करते हैं कि इस्लाम ने बहुत औरतों की आज्ञा दी है। हम कहते हैं कि क्या कोई ऐसा दिलेर और मर्द मैदान आरोप लगाने वाले है जो हमको यह दिखा सके कि क़ुरआन कहता है कि ज़रूर ज़रूर एक से अधिक औरतें करो। हाँ यह एक सच्ची बात है और बिलकुल क़ुदरती बात है कि कई बार समय इन्सान को ज़रूरत आ जाती है कि वह एक से अधिक औरतें करे। जैसे औरत अंधी हो गई है या और किसी ख़तरनाक बीमारी में पीड़ित हो कर इस योग्य हो गई कि घर के कार्यों को सरअंजाम नहीं दे सकती और मर्द हमदर्दी के कारण यह भी नहीं चाहता कि उसे अलग करे या गर्भ की ख़तरनाक बीमारियों का शिकार हो कर मर्द की क़ुदरती जरूरतों को पूरा नहीं कर सकती तो ऐसी अवस्था में यदि दूसरे निकाह की आज्ञा न हो तो बताओ क्या इससे व्यभिचार और बुरे आचरण को तरक़्क़ी न होगी? फिर यदि कोई मज़हब या शरीयत एक से अधिक विवाह को रोकती है तो निसन्देह वह व्यभिचार और बुरे आचरण की समर्थक है परन्तु इस्लाम जो दुनिया से बुरे आचरण तथा व्यभिचार और ज़ना को दूर करना चाहता है आज्ञा देता है कि ऐसी जरूरतों के दृष्टि से एक से अधिक बीवियां करे। ऐसा ही औलाद के न होने पर जबकि निसन्तान के मरने के बात ख़ानदान में बहुत से हंगामे और ख़ून ख़राबा होने तक हालत पहुंच जाती है। एक ज़रूरी बात है कि वह एक से ज़्यादा बीवियां करके औलाद पैदा करे बल्कि ऐसी अवस्था में नेक और शरीफ़ बीबियाँ ख़ुद आज्ञा दे देती हैं,अत: जितना ग़ौर करोगे यह विषय साफ़ और रोशन नज़र आएगा। ईसाई को तो हक़ ही नहीं पहुंचता कि इस विषय पर आलोचना करे, क्योंकि उनके मुस्लिमा नबी और मुलहम बल्कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के बुज़ुर्गों ने सात सात सौ और तीन तीन सौ बीबियाँ कीं और यदि वे कहें कि वह कदाचारी तथा दुराचारी थे तो फिर उनको इस बात का उत्तर देना मुश्किल होगा कि उनके इल्हाम ख़ुदा के इल्हाम कैसे हो सकते हैं? ईसाईयों में कई फ़िर्क़े ऐसे भी हैं जो नबियों की शान में ऐसी गुस्ताख़ियाँ जायज़ नहीं रखते । इसके अतिरिक्त इंजील में स्पष्टता से इस मसला को वर्णन ही नहीं किया गया। लन्दन की औरतों का ज़ोर एक कारण हो गया कि दूसरी औरत न करें। फिर उसके परिणाम ख़ुद देख लो कि लन्दन और पैरिस में पवित्रता और तक़्वा का कैसा सम्मान है।

इस्लाम की लड़ाईयां रक्षात्मक थीं

ऐसा ही दूसरे विषय ग़ुलामी और जिहाद पर भी उनके आरोप उचित नहीं; क्योंकि तौरेत में एक लम्बा सिलसिला ऐसी जंगों का चलता है हालाँकि इस्लाम की लड़ाईआं डीफ़ेन्स (रक्षात्मक) थीं और वे सिर्फ़ दस साल ही के अंदर ख़त्म हो गईं। मैं दावा से कहता हूँ कि ये विषय उनकी किताबों में से निकाल सकता हूँ। और ऐसा ही मेरा दावा है कि समस्त सच्चाइयां क़ुरआन मजीद में मौजूद हैं। यदि कोई दावा करने वाला ऐसी सच्चाई पेश करे कि वह क़ुरआन में नहीं। मैं उसे निकाल कर दिखाने को तैयार हूँ। इस्लामी शरीयत ने वे विषय लिए हैं जो कुदरता और फ़ित्रती रूप से इन्सान के लिए अभीष्ट हैं और जो हर पहलू से उसकी शक्तियों की तर्बीयत करते हैं। इन पर कोई आरोप नहीं हो सकता। हाँ ! इस्लाम के जो आरोप अन्य धर्मों पर हैं वे उनका उत्तर नहीं सकते।

नेक और बुरे का चेहरा

अत: मैं फिर कहता हूँ कि मेरी बातों को हानता और उपहास की दृष्टि से न देखें। उपहास से कुफ्र का अंदेशा है। बल्कि अल्लाह तआला के निशानों का सम्मान और ख़ौफ़ होना चाहिए। हर एक आरिफ़ इन बातों के हज़ारों उत्तर दे सकता है। क्या चेहरों में ऐसी निशानियां नहीं होतीं जिन को देखकर हम एक नेक और बुरे,बदमाश और अच्छे आचरण वाले में अन्तर कर सकते हैं और पहचान लेते हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में लिखा है कि एक व्यक्ति ने आपको देखकर कहा कि यह झूटों का मुँह नहीं। अब वह कौन सा निशान था जो झूटों में होता है और आप में न था। एक अन्तर तो था जिसको विवेक वाला इन्सान देख सकता है। ऐसा अज्ञानी और मूर्ख कौन है जो नेक और बुरे को चेहरा से देखकर अन्तर नहीं कर सकता। मोमिन का चेहरा और हर अंग उसको एक अन्तर प्रदान करता है और इसके ख़ुदा वाला होने का प्रमाण देता है। फिर यदि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मोहरे नबूवत में एक विशेषता हो तो बताओ इससे क्या दूरी अनिवार्य होती है। सब कुछ संभव है।

सिर्फ ईमानी मामलों पर ईमान लाना ज़रूरी है

अन्त में याद रखो कि यह एक मूल बात नहीं है। हमको ज़रूरत नहीं इन बातों में पड़ें। उसूल पर बहस होनी चाहिए। उसूल के होने पर आन्तरिक बात ख़ुद ही साबित हो जाती है। ईमान लाना ज़रूरी है। इस की कैफ़ीयत और भेद तक पहुंचने की कोशिश करना ज़रूरी नहीं। दुश्मन यदि वार्तालाप करे,तो हम उस को रोक सकते हैं। अल्लाह तआला और उस के गुणों पर,फरिशतों और अल्लाह तआला की किताबों और अंबिया अलैहिमुस्सालम इत्यादि ईमानी बातों पर ईमान लाना ज़रूरी है और उन सब बातों का मानना नियम है, और बाक़ी बातें उन पर आधारित हैं और ये सब सफ़ाई के साथ प्रमाणित सच्चाइयां हैं। इस्लाम की शिक्षा ऐसी साफ़ है कि हर शक्ति को मध्य मार्ग पर लाने वाली और ठीक स्थान पर

शेष पृष्ठ 15 पर

ख़ुत्बः जुमअः

तीन अवसर ऐसे आए हैं जहां रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के सम्बन्ध में फ़रमाया कि उन्होंने जन्नत ख़रीद ली है

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा-ए-राशिद, ज़ू-नुरैन हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु की विशेषताओं का वर्णन

ग़ज़वा-ए-ज़ातुल्रिकाअ, फ़तह मक्का, ग़ज़वाए-तबूक की कुछ घटनाएँ तथा हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के समय में होने वाली विजयों का वर्णन

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया आज की रात एक नेक व्यक्ति को स्वप्न में दिखाया गया कि हज़रतअबू-बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से जोड़ दिया गया है और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को हज़रत अबू-बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 05 फ़रवरी 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ग़ज़वाात (युद्ध) के बारे में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन चल रहा है। एक ग़ज़वाा था ग़ज़वाा-ए-ज़ातुल्रिका। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम नजद में ग़त्फ़ान के क़बीला बनू सल्बा और बनू मुहारिब पर आक्रमण के लिए चार-सौ या एक रिवायत के अनुसार सात सौ सहाबा के जत्थे के साथ रवाना हुए और मदीना में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को अमीर निर्धारति फ़रमाया और एक रिवायत के अनुसार हज़रत अबू ज़र ग़फ्फारी रज़ियल्लाहु अन्हु को अमीर निर्धारति फ़रमाया :

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम नजद में नखल के स्थान पर पहुंचे जिसे ज़ातुल रिक: कहते हैं। वहां आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुक़ाबले के लिए बड़ा लश्कर तैयार था। दोनों गिरोह एक दूसरे के आमने सामने हुए जबकि जंग नहीं हुई और लोग एक दूसरे से भयभीत रहे। इसी जंग के दौरान पहली बार मुस्लमानों ने स्लाते खोफ़ अदा की।

(सीरत इब्ने हश्शाम, पृष्ठ 614 से 615 ग़ज़वाा-ए-ज़ातुल्रिका, प्रकाशन दारुल क़ुतुब आलमी बेरूत 2001ई.) (तब्कातुल कुबरा लेबनान, भाग 2 पृष्ठ 280 ग़ज़वा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ज़ातुल रिक: प्रकाशन दारुल अहया अल्तुर्रास अरबी बेरूत 1996 ई.)

इस ग़ज़वो का इस नामकरण का कारण यह भी वर्णित है कि उसे ज़ातुल्रिका इसलिए कहते हैं क्योंकि इस में सहाबा ने अपने झंडों में पैवंद (चेपी) लगाए हुए थे। यह भी कहा जाता है कि इस क्षेत्र में वृक्ष या पहाड़ था जिस का नाम ज़ातुल्रिका है। बुख़ारी की एक रिवायत में इस तरह वर्णन है।

हज़रत अबू मूसा अशरी रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि हम एक हमले में नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ निकले और हम छ: आदमी थे। हमारे पास एक साँझा ऊंट था जिस पर हम बारी-बारी सवार होते थे। हमारे पांव फट गए अर्थात ग़ज़वाा में छ: आदमी नहीं थे। ये छ: आदमी उस ऊंट के लिए थे। और मेरे दोनों पांव भी फट गए और मेरे नाख़ुन गिर गए और हम अपने पांव पर कपड़ों के टुकड़े लपेटते थे। इसलिए उसका नाम ग़ज़वाा-ए-ज़ातुल्रिकाअ अर्थात चीथड़ों वाली लड़ाई रखा गया क्योंकि हम कपड़ों के टुकड़े अपने पैरों पर बाँधे थे।

(सही अल्बुखारी, पुस्तक अल्मग़ाज़ी, ग़ज़वाा ज़ातुल्रिकाअ, हदीस नंबर 4128)

यह एक नोट है वह भी वर्णन कर देता हूँ। रिसर्च सेल ने ठीक नोट लिखा है कि इतिहास की पुस्तकों और सीरा के अनुसार ग़ज़वाा-ए-ज़ातुल्रिकाअ चार हिज्री में हुआ था जबकि इमाम बुख़ारी ने इस ग़ज़वाा को ग़ज़वाा-ए-ख़ैबर के बाद क़रार दिया है क्योंकि हज़रत अबू मूसा अशरी रज़ियल्लाहु अन्हु इस ग़ज़वाा में शामिल हुए थे और वह ग़ज़वाा-ए-ख़ैबर के बाद मुस्लमान हुए थे इसलिए सात हिज्री की तारीख़ इस ग़ज़वाा की ज़्यादा कल्पना के निकट है।

(अस्सीरतुल नब्विय्या लेइब्ने हश्शाम, पृष्ठ 614 ग़ज़वाा-ए-ज़ातुल्रिका, प्रकाशन दारुल क़ुतुब आलमी बेरूत2001 ई.) (अल् तब्कातुल कुबरा लेइब्ने साअद, भाग 2 पृष्ठ 280 ग़ज़वाा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ज़ातुल्रिकाअ, दारे अहया अल्स्तुर्रास अल्अरबी बेरूत 1996 ई.) (सही अल्बुखारी, पुस्तक अल्मग़ाज़ी, ग़ज़वाा ज़ातुल रिक:, हदीस नंबर 4128)

फ़तह मक्का के सम्बन्ध में जो रवायात हैं जो 8 हिज्री में हुई इसमें एक तफ़सीली रिवायत सुंन निसाई में इस प्रकार वर्णित है जिस में फ़तह मक्का के अवसर पर उन लोगों का विस्तार से वर्णन हुआ है जिन के क़तल के बारे में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ओर से इरशाद जारी हुआ था। हज़रत मुसअब बिन साअद रज़ियल्लाहु अन्हु अपने पिता से रिवायत करते हैं कि फ़तह मक्का के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने चार पुरुषों और दो महिलाओं के अतिरिक्त अन्य सब कुफ़्फ़ार को अमान (सुरक्षा) दे दी थी। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया इन चार को क़तल कर दो यदि तुम उन्हें काअबा के पर्दों से चिमटे हुए पाओ। वे अक्रमा बिन अबू जहल, अब्दुल्लाह बिन ख़तल, मुक़ीस बिन सुबाबा और अब्दुल्लाह बिन साअद बिन अबी सराह थे। अब्दुल्लाह बिन ख़तल जब पकड़ा गया तो उसने ख़ाना काअबा के पर्दों को पकड़ा हुआ था। हज़रत सअद बिन हुरैस रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हु दोनों उसकी तरफ़ लपके और साअद रज़ियल्लाहु अन्हु ने आगे बढ़कर उसे क़तल कर दिया। मुकीस को लोगों ने बाज़ार में पाया और उसे क़तल कर दिया। अक्रमा समुंद्र की तरफ़ भाग गया। कश्ती पर सवार लोगों को समुंद्री तूफ़ान ने आ लिया। इस पर कश्ती वालों ने कहा तुम लोग इख़लास और सच्चाई से काम लो क्योंकि तुम्हारे माबूद यहां कुछ फ़ायदा नहीं देंगे। इस पर अक्रमा ने कहा बख़ुदा! मुझे समुंद्र में यदि कोई वस्तु बचाएगी तो इख़लास और सच्चाई है और ख़ुशकी पर भी इख़लास और सच्चाई ही मुझे बचाएगी। हे अल्लाह! मैं तुझ से पुख़्ता अह्द करता हूँ कि यदि तू मुझे इस तूफ़ान से महफ़ूज़ रखे तो मैं ज़रूर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास जा कर उनके हाथ पर अपना हाथ रखूँगा और मैं ज़रूर उन्हें क्षमा करने वाला और दयालु पाऊँगा। फिर वह वापस आया और उसने इस्लाम क़बूल कर लिया। इस बारे में ज़्यादा प्रसिद्ध रिवायत तो यही है कि जहाज़ पर चढ़ने से पहले ही उसकी पत्नी ने आकर उसे क़ायल कर लिया था और वापस ले गई थी। यह रिवायत भी आगे आ जाएगी। बहरहाल यह सुंन निसाई की एक रिवायत है। जहां तक अब्दुल्लाह बिन अबी सरा का सम्बन्ध है तो वह हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु के पास छुप गया। फिर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने लोगों को बैअत की दावत दी तो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु उसे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सामने लाए और अर्ज़ की हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ! अब्दुल्लाह की बैअत क़बूल फ़रमाएं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपना सिर उठा कर उसकी ओर तीन बार देखा और तीनों बार इंकार किया। बहरहाल आख़िर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसकी बैअत ले ली और फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह भी फ़रमाया कि कोई बुद्धिमान व्यक्ति न था जो इस व्यक्ति को क़तल कर देता जिस की बैअत लेने से मैं ने इंकार किया था। उन्होंने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ! हमें कैसे ज्ञान होता कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दिल में क्या था। आप

सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने क्यों नहीं आँख से हमें इशारा किया? इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि नबी के लिए जायज़ नहीं कि वह आँखों की ख़यानत करे। यह रिवायत सुंन अबू दाऊद में भी है। जबकि सुंन अबू दाऊद में एक दूसरी रिवायत भी उपस्थित है लेकिन इस रिवायत के आख़िरी फ़िक्रात अर्थात उसको क़तल करने इत्यादि का वर्णन नहीं है। इसलिए इस रिवायत में वर्णन है कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि अब्दुल्लाह बिन साद बिन अबी सरा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का कातिब था। उसे शैतान ने बहका दिया। वह कुफ़्फ़ार से मिल गया। फ़तह मक्का के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसके क़तल का आदेश दिया। हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु ने इसके लिए क्षमा मांगी। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे पनाह दे दी।

(सुंन निसाई, पुस्तक मुहारबा, बाब अल्हकम फिल्मुर्तद, हदीस 4072)(सुंन अबू दाऊद, पुस्तक उल-हदूद, बाब अल्हकम फ़ी मन अरतद, हदीस 4358-4359)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का इरशाद कि क़तल करना था क्यों नहीं क़तल किया? इसके बारे में एक वज़ाहत यह भी की जाती है कि इस रिवायत में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का सहाबा को यह फ़रमाना कि जब मैंने बैअत लेने में देरी की तो तुम लोगों ने उसको मार क्यों नहीं दिया संभव था कि क्योंकि यदि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसकी बैअत नहीं लेना चाहते और उसके क़तल के निर्णय पर क़ायम रहना पसंद फ़रमाते तो उसको क़तल करने का आदेश दे सकते थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम विजयी थे, रियासत के सरदार थे और उसके क़तल का निर्णय भी इन्साफ़ पर आधारित था। इसलिए हो सकता है कि इस रिवायत में किसी रावी की अपनी राय या ख़्याल शामिल हो गया हो। इसके अतिरिक्त यह रिवायत बुख़ारी और मुस्लिम में उपस्थित नहीं है और अबू दाऊद में इसी मज़मून की एक रिवायत हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी है जिस का वर्णन हो चुका है और इस में मारने का कोई वर्णन है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत मोमिनून की आयत नंबर 15 की तफ़सीर करते हुए इस घटना का वर्णन इस प्रकार करते हैं कि "इस आयत के साथ एक तारीख़ी घटना भी जुड़ी है जिस का यहां वर्णन कर देना ज़रूरी मालूम होता है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का एक वह्यी का लेखक था जिसका नाम अब्दुल्लाह बिन अबी-सरा था। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर जब कोई वह्यी नाज़िल होती तो उसे बुलवा कर लिखवा देते। एक दिन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम वह्यी की आयतें उससे लिखवा रहे थे। जब आप ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ पर पहुंचे तो उसके मुँह से निसंदेह निकल गया कि فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخَالِقِيْنَ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि यही वह्यी है। इसको लिख लो। उस उद्दण्ड को यह ख़्याल नहीं आया कि पिछली आयतों के नतीजा में यह आयत स्वभाविक रूप में आप ही बन जाती है। उसने समझा कि जिस तरह मेरे मुँह से यह आयत निकली और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसको वह्यी क़रार दे दिया है इसी तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम (हम इस बात से ख़ुदा की शरण चाहते हैं) सारा क़ुरआन बना रहे हैं। इसलिए वह मुर्तद हो गया और मक्का चला गया। फ़तह मक्का के अवसर पर जिन लोगों को क़तल करने का रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आदेश दिया था उनमें एक अब्दुल्लाह बिन अबीसरा भी था परन्तु हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे पनाह दे दी और वह आप के घर में तीन दिन छुपा रहा। एक दिन जब कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मक्का के लोगों से बैअत ले रहे थे हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु अब्दुल्लाह बिन अबीसरा को भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में ले गए और उसकी बैअत स्वीकार करने का निवेदन किया। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पहले तो कुछ देर देरी की परन्तु फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसकी बैअत ले ली। और इस तरह दुबारा उसने इस्लाम क़बूल कर लिया।"

(तफ़सीर कबीर, भाग 6 पृष्ठ 139)

सुंन निसाई की वर्णन की गई रिवायत में अक्रमा बिन अबू जहल के क़बूल-ए-इस्लाम की घटना इस प्रकार वर्णन हुई है जब कि सीरत की पुस्तकों में उसके इस्लाम क़बूल करने की जो तफ़सीलात वर्णन हुई हैं जैसा कि मैं ने पहले भी वर्णन किया था थोड़ी अलग हैं कि अक्रमा बिन अबू जहल उन लोगों में से था जिनके क़तल का नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़तह मक्का के अवसर पर आदेश दिया हुआ था। अक्रमा और उसका पिता नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को कष्ट देता था और वह मुस्लमानों पर बहुत ज़्यादा सख़्ती करता था। जब उसे ज्ञात हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसका ख़ून बहाने का आदेश दिया है तो वह यमन की तरफ़ भाग गया। उसकी पत्नी ने बाद इसके कि उसने इस्लाम क़बूल कर लिया था उसका पीछा किया और उसने अक्रमा को समुंद्र के किनारे पर पाया जब वह कश्ती पर सवार होने का इरादा कर रहा था। एक कथन के अनुसार उसने अक्रमा को तब पाया जबकि वह कश्ती में सवार हो चुका था। उसने अक्रमा को यह कहते हुए रोका कि हे मेरे चचा के बेटे मैं तुम्हारे पास उस इन्सान की ओर से आई हूँ जो लोगों में सबसे ज़्यादा जोड़ने वाले और लोगों में सबसे ज़्यादा नेक और लोगों में सबसे ज़्यादा ख़ैर-ख़्वाह हैं। तू अपनी जान को हलाकत में मत डाल क्योंकि मैं तुम्हारे लिए अमान तलब कर चुकी हूँ। इस पर वह अपनी पत्नी के साथ आया और उसने इस्लाम क़बूल कर लिया और उसका इस्लाम बहुत सुन्दर रहा।

रिवायत में आता है कि जब अक्रमा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो उसने अर्ज़ किया कि हे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मेरी पत्नी ने मुझे बताया है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुझे अमान दी है। फ़रमाया : तू ने सच्च कहा। निश्चित रूप में तू अमन में है। इस पर अक्रमा ने कहा मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसके बंदे और उसके रसूले हैं और उसने अपना सिर शर्म से नीचे झुका लिया। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे फ़रमाया हे अक्रमा तू मुझ से जो भी वस्तु माँगेगा यदि में उसकी ताक़त रखता हूँगा तो ज़रूर तुझे दूँगा। अक्रमा ने अर्ज़ किया कि मेरी हर उस शत्रुता के लिए क्षमा की दुआ कर दें जो मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से की थी। इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह दुआ की कि अल्लाह! अक्रमा की हर वे शत्रुता से उसको क्षमा दे जो उसने मुझ से की थी या हर वे बुरी बात माफ़ कर दे जो उसने की। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ुशी से उठे और अपनी चादर इस पर डाल दी और फ़रमाया स्वागतम उस व्यक्ति को जो ईमान लाने की हालत में और हिज्रत करने की हालत में हमारे पास आया। अक्रमा बाद में बड़े महान सहाबा में गिने जाते थे।

अक्रमा के ईमान लाने से वह भविष्यवाणी भी पूरी हुई जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा से वर्णन फ़रमाई थी कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने स्वप्न में देखा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम स्वर्ग में हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने वहां अंगूर का एक गुच्छा देखा जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बहुत अच्छा लगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पूछा यह किस के लिए है तो कहा गया कि अबू जहल के लिए है। यह बात आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर कष्ट दायक गुज़री। आपको अच्छी नहीं लगी, परेशान हुए और फ़रमाया : स्वर्ग में तो मोमिन के अतिरिक्त और कोई दाख़िल नहीं होता तो यह अबू जहल के लिए किस तरह? फिर जब अक्रमा बिन अबू जहल ने इस्लाम क़बूल किया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इससे ख़ुश हुए और इस गुच्छे का अर्थ यह वर्णन फ़रमाया कि इससे मुराद अक्रमा था।

(सीरतुल हल्बिया, भाग 3 पृष्ठ 132-133 बाब वर्णन मुग़ाज़िया ग़ज़वाा-ए-फ़तह मक्का, प्रकशित दारुल क़ुतुब अलालमी बेरूत 2002 ई.)

ग़ज़वाा-ए-तबूक जो रजब 9 हिज्री में हुआ इस ग़ज़वाा-ए-तबूक को جَيْشُ الْعُسْرَة। अर्थात तंगी वाला लश्कर भी कहते हैं। इस ग़ज़वाा की तैयारी के लिए हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को जिस माली ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली उसका वर्णन इस प्रकार मिलता है कि ग़ज़वाा-ए-तबूक को جَيش العسرة अर्थात तंगी वाला लश्कर भी कहते हैं। इस ग़ज़वाा की तैयारी के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तहरीक फ़रमाई तो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने शाम की तरफ़ तिजारत की उद्देश्य से तैयार किए जाने वाला अपने सौ ऊंटों का क़ाफ़िला उनके कुजावों और पालानों के साथ प्रस्तुत कर दिया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फिर तहरीक फ़रमाई तो इस ग़ज़वाा की ज़रूरीयात के पेश-ए-नज़र हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने मज़ीद सौ ऊंट कुजावों और पालानों के साथ तैयार करवा कर प्रस्तुत कर दिए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फिर तहरीक फ़रमाई तो तीसरी बार हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फिर मज़ीद एक सौ ऊंट कुजावों और पालानों के साथ तैयार करवा के आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में प्रस्तुत किए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जब मंच से नीचे उतरे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया مَا عَلٰى عُثْمَانَ مَا عَمِلَ بَعْدَ هٰذِهٖ۔ مَا عَلٰى عُثْمَانَ مَا عَمِلَ بَعْدَ هٰذِهٖ इसके बाद उस्मान जो भी करे उसका कोई बदला नहीं होगा। इसके अतिरिक्त हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु

ने दो सौ औक़िया सोना भी नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के समक्ष प्रस्तुत किया।

एक दूसरी रिवायत में है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने हाज़िर हो कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की झोली में एक हज़ार दीनार डाल दिए। इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम झोली में पड़े दीनारों को उलटते पलटते रहे और फ़रमाया : مَا ضَرَّ عُثْمَانَ مَا عَمِلَ بَعْدَ الْيَوْمِ आज के बाद उस्मान जो भी करेगा उसको कोई हानी नहीं पहुँचेगी। एक रिवायत के अनुसार हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस अवसर पर दस हज़ार दीनार अता किए तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए यह दुआ की। غَفَرَ اللهُ لَكَ يَا عُثْمَانُ مَااَسْرَرْتَ وَمَا اَعْلَنْتَ وَمَا هُوَ كَائِنٌ اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَا يُبَالِيْ مَا عَمِلَ بَعْدَهَا कि हे उस्मान अल्लाह तुझ से मग़फ़िरत का सुलूक फ़रमाए जो तू ने मख़फ़ी तौर पर किया और जो तू ने ऐलानीया किया और जो क़ियामत तक होने वाला है। इसके बाद वह जो भी अमल करे उसे कोई फ़िक्र नहीं होनी चाहिए।

एक रिवायत के अनुसार आप ने उस जंग की तैयारी के लिए एक हज़ार ऊंट और सत्तर घोड़े पेश किए। एक रिवायत के अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस अवसर पर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया : हे उस्मान अल्लाह तआला तुझे वह सब कुछ माफ़ फ़रमाए जो तू ने मख़फ़ी तौर पर किया और जो तू ने ऐलानीया किया और जो क़ियामत तक होने वाला है। इस अमल के बाद यह जो भी करे अल्लाह तआला को इसकी कोई पर्वा नहीं। एक रिवायत के अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस अवसर पर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के हक़ में यह दुआ की कि اَللّٰهُمَّ ارْضَ عَنْ عُثْمَانَ فَاِنِّيْ عَنْهُ رَاضٍ कि हे अल्लाह तू उस्मान से राज़ी हो जा क्योंकि मैं उससे राज़ी हूँ। (शरह ज़रक़ानी अली अलमवाहब अल् दीनिया, भाग 4 पृष्ठ 66, 68 से 71 ग़ज़वा तबूक, दारुल क़ुतुब अलालमी बेरूत 1996 ई.) (सुंन अल् तिर्मज़ी, पुस्तक मनाकिब, बाब फ़ी मनाक़िब उस्मान हदीस 3701 से 3700)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं कि "सहाबा ने कई बार अपने घर का माल और वस्तुएं बेच कर जंग के अख़राजात पूरे किए बल्कि यह भी नज़र आता है कि कई बार उन्होंने अपनी जायदादें बेच कर दूसरों पर ख़र्च कर दिया और उनके लिए तमाम ज़रूरीयात प्रदान कीं। इसलिए एक बार रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बाहर तशरीफ़ लाए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अमुक यात्रा पर हमारी फ़ौज जाने वाली है परन्तु मोमिनों के पास कोई वस्तु नहीं। क्या कोई तुम में से है जो सवाब हासिल करे? हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु यह सुनते ही उठे और आप ने अपना जमा किया हुआ धन निकाल कर वह रक़म मुस्लमानों के अख़राजात के लिए रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में पेश कर दी। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जब यह देखा तो फ़रमाया उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने जन्नत ख़रीद ली। इसी तरह एक दफ़ा एक कुँआं बिक रहा था। मुस्लमानों को चूँकि उन दिनों पानी की बहुत तकलीफ़ थी इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस अवसर पर फिर फ़रमाया कोई है जो सवाब हासिल करे? हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ! मैं हाज़िर हूँ। इसलिए आप ने वह कुँआं ख़रीद कर मुस्लमानों के लिए वक़्फ़ कर दिया। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फिर फ़रमाया कि उस्मान ने जन्नत ख़रीद ली। इसी तरह एक और अवसर पर भी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के सम्बन्ध में यही शब्द कहे। उद्देश्य तीन अवसर ऐसे आए हैं जहां रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के सम्बन्ध में फ़रमाया कि उन्होंने जन्नत ख़रीद ली है।" (ख़ुतबात-ए-मेहमूद,भाग 19 पृष्ठ 98-99 ख़ुतबा जुमा वर्णन फ़र्मूदा 18 फ़रवरी 1938 ई.)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं कि "रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के सम्बन्ध में यह फ़रमाया है कि उन्होंने जन्नत ख़रीद ली और वह जन्नती हैं और एक दफ़ा सुलह हुदैबिया के अवसर पर जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुस्लमानों से दुबारा बैअत ली और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु उस वक़्त उपस्थित न थे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपना हाथ दूसरे हाथ पर रखा और फ़रमाया यह उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का हाथ है। मैं उसकी तरफ़ से अपने हाथ पर रखता हूँ। इस तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने हाथ को हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का हाथ क़रार दिया और फिर एक दफ़ा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया उस्मान! ख़ुदा तआला तुझे एक क़मीज़ पहनाएगा। मुनाफ़िक़ चाहेंगे कि वह तेरी उस क़मीज़ को उतार दें परन्तु तू उस क़मीज़ को उतारना नहीं।" हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "अब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से यह फ़रमाते हैं कि इस क़मीज़ को न उतारना और जो तुम से उस क़मीज़ के उतारने का मुतालिबा करेंगे वह मुनाफ़िक़ होंगे।"

(ख़ुतबाते महमूद, भाग19 पृष्ठ 100 ख़ुतबा जुमा 18 फ़रवरी 1938 ई.)

तो इस से यह भी ज़ाहिर हो गया कि वे लोग जो भी थे वे मुनाफ़िक़ थे क्योंकि उनकी भविष्यवाणी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पहले ही फ़र्मा दी।

हज़रत ख़लीफ़ा सालिस (तृतीय) ने एक जगह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ुर्बानी का वर्णन इस तरह फ़रमाया है कि "जंगी ज़रूरत थी। नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा कराम के सामने ज़रूरत को रखा और माली क़ुर्बानियां पेश करने की उन्हें तलक़ीन की जिसका नतीजा यह हुआ कि हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु तो अपना सारा माल लेकर आ गए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अपना आधा माल लेकर आ गए। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि मेरी यह पेशकश क़बूल कर ली जाए कि मैं दस हज़ार सहाबा का पूरा ख़र्च बर्दाश्त करूँगा और इसके अतिरिक्त आप ने एक हज़ार ऊंट और सत्तर घोड़े दीए।"

(ख़ुतबात-ए- नासिर, भाग 2 पृष्ठ 341 ख़ुतबा जुमा 18 अक्तूबर 1968 ई.)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का हज़रत अबू-बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के समय में क्या किरदार था और आप का स्थान और पद क्या था? हज़रत अबू-बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु आप को किस तरह का सम्मान देते थे। क्या समझते थे? हज़रत अबू-बक्र के दौर-ए-ख़िलाफ़त में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु उन सहाबा और अहले शूरा में से थे जिन से महत्वपूर्ण विषयों में राय ली जाती थी। जब हज़रतअबू-बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुर्तद होने के उपद्रव का मुक़ाबला करके इसे ख़त्म कर दिया तो रौम पर चढ़ाई करने और मुख़्तलिफ़ सिमतों में मुजाहिदीन को रवाना करने का इरादा फ़रमाया और इस सिलसिला में लोगों से मश्वरा तलब किया। कुछ सहाबा ने मश्वरा दिया। इस पर हज़रत अबू-बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने मज़ीद मश्वरा तलब फ़रमाया जिस पर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि आप उस धर्म के मानने वालों के ख़ैरख़ाह और मुशफ़िक़ हैं। अत: आप जिस राय को आम लोगों के लिए उचित समझें तो उस पर अमल करने का पुख़्ता निर्णय करलें क्योंकि आप के बारे में कुधारणा नहीं की जा सकती। अर्थात हज़रत अबू-बक्र को अर्ज़ किया कि आप के बारे में कुधारणा नहीं की जा सकती। इस पर हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु , हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत साअद रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अबू उबेदाह रज़ियल्लाहु अन्हु , हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु और उस मज्लिस में उपस्थित मुहाजिरीन और अंसार ने कहा हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने सच्च कहा है। आप जो उचित समझें करें। हम न तो आप की मुख़ालिफ़त करेंगे और न ही आप पर कोई इल्ज़ाम लगाएँगे। इसके बाद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने बात चीत की। फिर हज़रत अबू-बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु लोगों में खड़े हुए और अल्लाह तआला का वर्णन किया जिसका वह अधिकारी है और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर दुरूद भेजा। फिर फ़रमाया : हे लोगो अल्लाह तआला ने तुम पर इस्लाम के द्वारा फ़ज़ल नाज़िल फ़रमाया और जिहाद के द्वारा तुम्हें इज़्ज़त बख़शी और इस धर्म के द्वारा तुम लोगों को समस्त धर्मों पर फ़ज़ीलत बख़शी। अत: हे अल्लाह के बंदो शाम के देश में रौम के साथ जंग के लिए लश्कर की तैयारी करो। (उद्धरित तारीख़ दमिशक़ अल-कबीर लेबनान असाकिर, भाग 1 भाग 2 पृष्ठ 46 दारुल हया तुर्रास अरबी 2001ई.)

हज़रत अबू-बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब अपने अस्हाब से मश्वरा किया कि हज़रत अब्बान बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु के बाद किस को बेहरीन का गवर्नर बना कर भेजा जाए तो हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया उस आदमी को भेजें जिसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बेहरीन वालों पर गवर्नर निर्धारति फ़रमाया था और वह उनके क़बूले इस्लाम और इताअत करने का कारण हुआ था और वह उन लोगों से और उनके क्षेत्र से भी अच्छी तरह अवगत है। वह आला बिन हज़रमी है। इस पर हज़रत अबू-बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने आला बिन हज़रमी को बेहरीन भेजने पर इत्तिफ़ाक़ कर लिया।

(कंज़ुल अम्माल, भाग 3 भाग 5 पृष्ठ 248 पुस्तक ख़िलाफ़त मा ईमारत, रिवायत 14089 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2004 ई.)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि हज़रत अबू-बक्र रज़ियल्लाहु

अन्हु के ख़िलाफ़त के समय में एक बार बारिश नहीं हुई। लोग हज़रत अबू-बक्र की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया आसमान बारिश नहीं बरसा रहा और ज़मीन फ़सलें नहीं उगा रही। लोग सख़्त मुसीबत का शिकार हैं। हज़रत अबू-बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया तुम लोग जाओ और शाम तक सब्र से काम लो। अल्लाह तआला तुम्हारी परेशानी को दूर फ़र्मा देगा। इतने में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का सौ ऊंटों का तिजारती क़ाफ़िला गंदुम या खाने का सामान लादे शाम से मदीना पहुंच गया। इसकी ख़बर सुनकर लोग हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के दरवाज़े पर गए और दरवाज़ा खटखटाया। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु लोगों में निकले और पूछा कि आप क्या चाहते हैं। लोगों ने कहा कि आप जानते हैं कि अकाल का समय है। आसमान बारिश नहीं बरसा रहा और ज़मीन भी फ़सलें नहीं उगा रही। लोग शदीद परेशानी का शिकार हैं। हमें मालूम हुआ है कि आपके पास अनाज है। आप उसे हमारे पास बेच दें ताकि हम उसे गरीबों और ज़रुरतमंदों तक पहुंचा दें। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : बहुत अच्छा अंदर आ जाओ। अन्दर आ के ख़रीद लो। व्यापारी आपके घर में दाख़िल हुए और अनाज को हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के घर में पड़ा हुआ पाया। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने व्यापारियों से कहा जो सामान मैंने शाम के देश से, जो जहां से मैंने ख़रीदा है मेरी क़ीमत ख़रीद पर आप कितना मुनाफ़ा देंगे? शाम से सामान लेकर आया हूँ। मैं यहां वहां से ख़रीद के लाया हूँ। तुम मुझे बताओ तुम मुझे इस पर कितना लाभ दोगे? वहां जितने लोग थे कुछ मुफ़्त तक़सीम करना चाहते थे कुछ व्यापारी थे। उन्होंने कहा कि हम दस के बारह दे देंगे। यदि उसकी क़ीमत दस दिरहम है तो हम बारह दे देते हैं। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा मुझे इस से ज़्यादा मिल रहा है। तो उन्होंने कहा हम दस के पंद्रह दे देंगे। दस के बजाए हम पंद्रह देने को तैयार हैं। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा मुझे इससे भी ज़्यादा मिल रहा है। व्यापारियों ने कहा हे अबू उमर! मदीना में तो हमारे अतिरिक्त और कोई व्यापारी नहीं है। तो कौन आपको इस से ज़्यादा दे रहा है। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया अल्लाह तआला मुझे हर दिरहम के बदले दस ज़्यादा दे रहा है। हर एक के बदले में दस गुना दे रहा है। क्या आप लोग इससे ज़्यादा दे सकते हैं। उन्होंने कहा नहीं हम तो इससे ज़्यादा नहीं दे सकते। इस पर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया मैं अल्लाह को गवाह बनाते हुए इस अनाज को मुस्लमानों के गरीब लोग पर सदक़ा करता हूँ। अर्थात ये सारे का सारा अनाज में ग़रीबों को देता हूँ और इसकी कोई क़ीमत नहीं लूँगा। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जिस दिन यह घटना हुई, अनाज तक़सीम किया गया, सदक़ा दिया गया मैंने उस रात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को स्वप्न में देखा। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम एक ग़ैर अरबी घोड़े पर सवार हैं जो बड़े शरीर वाला है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर नूर के वस्त्र हैं और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पैरों में नूर की जूतीयां हैं और हाथ में नूर की छड़ी है और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जल्दी में हैं। मैं ने अर्ज़ की हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ! मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से गुफ़्तगु का बहुत अभिलाषी हूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इतनी जल्दी में कहाँ तशरीफ़ ले जा रहे हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : हे इब्ने अब्बास! उस्मान ने एक सदक़ा किया है और अल्लाह तआला ने उसे क़बूल फ़र्मा लिया है और जन्नत में उसकी शादी की है और हमें उनकी शादी में शिरकत की दावत दी गई है।

(सीरतुल मोमिनीन उस्मान बिन अफ़्फ़ान अली मुहम्मद सलाबी, पृष्ठ 51-52 अल् फ़सलुल अव्वल, ज़ू-नुरैन उस्मान बिन अफ़्फ़ान बैन मक्का और मदीना, दारुल मारूफ बेरूत 2006 ई.)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के समय में किरदार और मुक़ाम और मर्तबा" के बारे में ये कुछ बातें वर्णन करता हूँ :

जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा बने तो आप ने बड़े सहाबा से बैतुल-माल से अपने वज़ीफ़े के सम्बन्ध में मश्वरा किया। इस पर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया। खाएं और खिलाएं। (सीरतुल मोमिनीन उस्मान बिन अफ़्फ़ान अली मुहम्मद सलाबी, पृष्ठ 53 अल् फ़सलुल अव्वल, ज़ू-नुरैन उस्मान बिन अफ़्फ़ान मक्का और मदीना के मध्य, दारुल मारूफ बेरूत 2006 ई.)

जो आप की ज़रूरीयात हैं आप पूरी करें और जो लोगों की ज़रूरीयात हैं वे भी पूरी करें। कोई फिक्स (fix) करने की ज़रूरत नहीं है। जब इस्लामी फ़ुतूहात का सिलसिला बड़ा हुआ और माल की कसरत हुई तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने सहाबा में से कुछ को इस माल के बारे में मुशावरत के लिए इकट्ठा किया। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया मैं देखता हूँ कि माल बहुत हो गया है जो लोगों के लिए काफ़ी है। यदि लोगों की गणना न की गई ताकि यह मालूम हो सके कि किस ने क्या लिया है और किस ने नहीं लिया तो मुझे डर है कि मुश्किलात पैदा होंगी। कई दफ़ा लोग दो-दो बार ले जाऐंगे। बाक़ायदा इंतिज़ाम होना चाहिए। रजिस्टर बनने चाहिऐं। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की राय को इख़तियार फ़रमाया और गणना करके लोगों के नाम रजिस्टरों में महफ़ूज़ करने का काम अमल में आया।

(सीरतुल मोमिनीन उस्मान बिन अफ़्फ़ान मुहम्मद सलाबी, पृष्ठ 54 अल् फ़सलुल अव्वल, ज़ू-नुरैन उस्मान बिन अफ़्फ़ान मक्का और मदीना के मध्य, दारुल मारूफ बेरूत 2006 ई.)

और फिर बाक़ायदा उसके हिसाब से हर एक को इमदाद मिलनी शुरू हुई।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त की बाबत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी भी है। इसका पहले इशारतन क़मीज़ पहनने का और मुनाफ़िक़ों का क़मीज़ उतारने का वर्णन हो चुका है। हज़रत अबू-बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से यह रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक दिन फ़रमाया तुम में से किसी ने स्वप्न देखा है। एक व्यक्ति ने कहा। मैंने देखा मानों एक तराज़ू आसमान से उतरा और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को और हज़रत अबू-बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को तौला गया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अबू-बक्र से भारी निकले। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अबू-बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को तौला गया तो हज़रत अबू-बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु भारी निकले। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को तौला गया तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु भारी निकले। फिर तराज़ू उठा लिया गया तो हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चेहरे से नापसंदीदगी देखी। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस स्वप्न पर ख़ुशी का इज़हार नहीं किया। बड़ी नापसंदीदगी हुई।

(सुंन अबी दाऊद, किताब सुन्नाह, बाब फ़ी खुल्फ़ा, हदीस नंबर 4634)

एक और रिवायत इस प्रकार है कि हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया आज की रात एक नेक व्यक्ति को स्वप्न में दिखाया गया कि हज़रत अबू-बक्र को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से जोड़ दिया गया है और हज़रत उमर को हज़रत अबू-बक्र से और हज़रत उस्मान को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से। हज़रत जाबिर वर्णन करते हैं कि जब हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास से उठ कर आए तो हमने कहा कि नेक पुरुष का अर्थात तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हैं और कुछ का कुछ से जोड़े जाने का अर्थ यह है कि यही लोग इस बात के अर्थात धर्म के संरक्षक होंगे जिस के साथ अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को भेजा है।

(सुंन अबी दाऊद, किताब सुन्नाह, बाब फ़ी खुल्फ़ा, हदीस नंबर 4636)

हज़रत समुरह बिन जुन्दुब रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि एक व्यक्ति ने कहा या रसूले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मैंने देखा जैसे कि आसमान से एक डोल लटकाया गया। पहले हज़रत अबू-बक्र आए तो उस की दोनों लकड़ियाँ पकड़ कर उसमें से थोड़ा सा पिया। फिर उमर रज़ियल्लाहु अन्हु आए तो उसकी दोनों लकड़ियाँ पकड़ीं और उन्होंने ख़ूब सैर हो कर पिया। फिर उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु आए और उसकी दोनों लकड़ियाँ पकड़ीं और ख़ूब सैर हो कर पिया। फिर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु आए और उसकी दोनों लकड़ियाँ पकड़ीं तो वह छलक गया और उसमें से कुछ उनके ऊपर भी पड़ गया।

(सुंन अबी दाऊद, किताब सुन्नाह, बाब फ़ी खुल्फ़ा, हदीस नंबर 4637)

ख़िलाफ़त की तर्तीब के लिहाज़ से यह भी इशारा था और अली रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ जो सारा समय गुज़रा वह मुश्किलात का ही था। इस तरफ़ इशारा था कि सही तरह पीने का अवसर नहीं मिला।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के इंतेखाब-ए-ख़िलाफ़त के लिए जो मज्लिस-ए-शूरा क़ायम हुई थी इस बारे में हज़रत मिसवर बिन मख़रम वर्णन करते हैं कि हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु अपने ऊपर होने वाले हमले के बाद जब अभी ठीक थे तो आप से बार-बार दरख़ास्त की जाती कि आप कसी को ख़लीफ़ा निर्धारति फ़र्मा दें लेकिन आप इंकार फ़रमाते। एक दिन आप मंच पर तशरीफ़ लाए और कुछ पंक्तियाँ कहीं और फ़रमाया यदि मैं मर जाऊं तो तुम्हारा मुआमला इन छः लोगों के सुपुर्द होगा जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से इस हालत में जुदा हुए जबकि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उन से राज़ी थे। अली बिन

अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु और आप के नज़ीर ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु, अब्दुर्रहमान बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु और आप के नज़ीर उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु, तल्हा बिन उबेदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु और आप के नज़ीर साद बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु। फिर आप ने फ़रमाया ख़बरदार! मैं तुम सबको निर्णय करने में अल्लाह का तक़्वा इख़तियार करने और तक़सीम में इन्साफ़ इख़तियार करने का आदेश देता हूँ। अबू जाफ़र वर्णन करते हैं कि हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इंतेखाब-ए-ख़िलाफ़त के लिए मज्लिस-ए-शूरा के मेम्बरों से कहा कि अपने इस मुआमले में आपसी मश्वरा करो। फिर यदि दोनों तरफ़ दो-दो वोट हों तो पुन: मश्वरा करो और यदि चार और दो वोट हों तो फिर जिस के वोट ज़्यादा हों उसे इख़तियार करो। ज़ैद बिन असलम अपने पिता से वर्णन करते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया यदि दोनों तरफ़ तीन तीन वोट हों तो जिस तरफ़ हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु होंगे उस तरफ़ के लोगों को सुनना और इताअत करना।

अब्दुर्रहमान बिन सईद वर्णन करते हैं कि जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ज़ख़मी हुए तो आप ने फ़रमाया सुहैब रज़ियल्लाहु अन्हु तुम लोगों को तीन दिन तक नमाज़ पढ़ाएँगे। अर्थात कि सुहैब रज़ियल्लाहु अन्हु को नमाज़ का ईमाम निर्धारति फ़रमाया। फिर फ़रमाया अपने इस मुआमले में अर्थात ख़िलाफ़त के बारे में मुशावरत करो और यह मुआमला उन छ: लोगों के सपुर्द है। फिर इसके बाद जो तुम्हारी मुख़ालिफ़त करे उसकी गर्दन उड़ा दो। हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी वफ़ात से कुछ देर क़बल हज़रत अबू तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु की ओर सन्देश भेजा और फ़रमाया हे अबू तल्हा तू अपनी क़ौम अंसार में से पच्चास लोगों को लेकर उन अस्हाबे शूरा के पास चले जाओ और उन्हें तीन दिन तक न छोड़ना यहां तक कि वह अपने में से किसी को अमीर मुंतख़ब कर लें। हे अल्लाह ! तू उन पर मेरा ख़लीफ़ा है।

इसहाक़ बिन अब्दुल्लाह वर्णन करते हैं कि हज़रत अबू तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु अपने साथीयों के साथ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ब्र तैयार करते वक़्त कुछ देर रुके और इसके बाद अस्हाबे शूरा के साथ ही रहे। फिर जब इन अस्हाब शूरा ने अपना मुआमला हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ रज़ियल्लाहु अन्हु के सपुर्द कर दिया और कहा कि वह जिसे चाहें अमीर निर्धारति कर दें तो हज़रत अबू तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु उस वक़्त तक हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ रज़ियल्लाहु अन्हु के घर के दरवाज़े पर रहे जब तक कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत न कर ली।

हज़रत सलमा बिन अबू सलमा अपने पिता से रिवायत करते हैं कि सबसे पहले हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत की। फिर इसके बाद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के आज़ाद करदा ग़ुलाम उमर बिन उमेरह अपने दादा से रिवायत करते हैं कि मैं ने देखा कि सबसे पहले हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत की। इसके बाद लोगों ने एक के बाद एक करके आपकी बैअत की। (अल् तब्कातुल कुबरा लेब्ने साअद भाग तीन, पृष्ठ 34-35 वर्णन وماكان من امرهم، ذكر بيعة عثمان.... दारुल अहया तुर्रास अरबी बेरूत 1996 ई.)

सही बुख़ारी में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की आख़िरी बीमारी में अपने बाद में आने वाले ख़लीफ़ा को नसाहे और मज्लिस-ए-शूरा के हवाले से जो तफ़सील वर्णन हुई है उसका वर्णन इस प्रकार मिलता है कि लोगों ने कहा अमीरुल-मोमनीन वसीयत कर दें। किसी को ख़लीफ़ा निर्धारति कर जाएं। उन्होंने फ़रमाया में इस ख़िलाफ़त का हक़दार उन कुछ लोगों में से बढ़कर और किसी को नहीं पाता कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ऐसी हालत में फ़ौत हुए कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उनसे प्रसन्न थे और उन्होंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत साअद रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ रज़ियल्लाहु अन्हु का नाम लिया और कहा अब्दुल्लाह बिन उमर तुम्हारे साथ शामिल रहेगा और इस ख़िलाफ़त में इस का कोई हक़ नहीं। यह रिवायत पहले भी मैं वर्णन कर चुका हूँ। इसलिए यहां सारांश में वर्णन करता हूँ। बहरहाल हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात के बाद जब उनकी तदफ़ीन से फ़राग़त हुई तो वे आदमी जमा हुए जिनका नाम हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने लिया था। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा अपना मुआमला अपने में से तीन आदमीयों के सपुर्द कर दो। हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा मैंने अपना इख़तियार हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को दिया और हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा मैंने अपना इख़तियार हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को दिया और हज़रत साअद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा मैंने अपना इख़तियार हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु को दिया। हज़रत अब्दुर्रहमान ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा आप दोनों में से जो भी इस विषय से विमुख होगा हम उसीके हवाले इस मुआमले को कर देंगे और अल्लाह और इस्लाम उसका निगरान होगा अर्थात इंतेखाबे ख़िलाफ़त का मुआमला उस के सपुर्द कर दिया जाएगा। उनमें से उसीको तजवीज़ करेगा जो उसके नज़दीक अफ़ज़ल है। इस बात ने दोनों बुज़ुर्गों को ख़ामोश कर दिया। फिर हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि क्या आप इस मुआमले को मेरे सपुर्द करते हैं और अल्लाह मेरा निगरान है कि जो आप में से अफ़ज़ल है उसको तजवीज़ करने के सम्बन्ध में कोई भी कमी नहीं करूँगा। फिर यही है कि मेरे सपुर्द कर दो। अब इस कमेटी की जो सदारत है वह फिर मेरे सपुर्द हो जाएगी। पहले तो इन दोनों से कहा कि किसी एक को सदर बना दिया जाए। उन्होंने कहा वो अलग नहीं होते, विमुख नहीं होते तो उन्होंने कहा अच्छा फिर में इस मुआमले से विमुख होता हूँ और सदारत इस तरह होगी। बहरहाल उन्होंने कहा फिर मैं जो निर्णय करूँगा वह इन्साफ़ से करूँगा और अल्लाह मेरा निगरान है। उन दोनों ने कहा अच्छा। फिर अब्दुर्रहमान उन दोनों में से एक का हाथ पकड़ कर अलग ले गए और कहने लगे आपका आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से रिश्तेदारी का सम्बन्ध है और इस्लाम में आपका जो स्थान है वह आप जानते ही हैं। अल्लाह आपका निगरान है। बताएं यदि मैं आपको अमीर बनाऊँ तो क्या आप ज़रूर इन्साफ़ करेंगे? और यदि मैं उस्मान को अमीर बनाऊँ तो आप उसकी बात सुनेंगे और उनका आदेश मानेंगे? अर्थात पहले हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का हाथ पकड़ कर ले गए। उनसे पूछा। फिर हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु दूसरे को तन्हाई में ले गए अर्थात अब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की बारी आई और उनसे भी वैसे ही कहा जब उन्होंने पुख़्ता अह्द ले लिया तो फिर आपने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को कहा कि आप अपना हाथ उठाएं और उन्होंने उनसे बैअत की और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी उनसे बैअत की और घर वाले अंदर आ गए और उन्होंने भी उनसे बैअत की।

(सही अल्बुखारी, पुस्तक फ़ज़ाइल अस्हाबुन्नबी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बाब किस्सा बैअत, हदीस 3700)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़लीफ़ा चुने जाने के सम्बन्ध में वर्णन फ़रमाते हैं कि "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जब ज़ख़मी हुए और आप ने महसूस किया कि अब आपका आख़िरी वक़्त क़रीब है तो आप ने छ: आदमीयों के सम्बन्ध में वसीयत की कि वे अपने में से एक को ख़लीफ़ा निर्धारति कर लें। वे छ: आदमी ये थे। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत साअद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु। इसके साथ ही हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को भी आपने इस मश्वरा में शरीक करने के लिए निर्धारति फ़रमाया परन्तु ख़िलाफ़त का हक़दार क़रार नहीं दिया और वसीयत की कि ये सब लोग तीन दिन में निर्णय करें और तीन दिन के लिए सुहैब रज़ियल्लाहु अन्हु को नमाज़ का इमाम निर्धारति किया और मश्वरा की निगरानी मिक़दाद बिन अस्वद रज़ियल्लाहु अन्हु के सपुर्द की और उन्हें हिदायत की कि वह सबको एक जगह जमा करके निर्णय करने पर मजबूर करें और ख़ुद तलवार लेकर दरवाज़े पर पहरा देते रहें। और फ़रमाया कि जिस पर कसरते राय से इत्तिफ़ाक़ हो सब लोग उसकी बैअत करें और यदि कोई इंकार करे तो उसे क़तल कर दो लेकिन यदि दोनों तरफ़ तीन तीन हो जाएं तो अब्दुल्लाह बिन उमर उन में से जिसको तजवीज़ करें वह ख़लीफ़ा हो। यदि इस निर्णय पर वह राज़ी न हों तो जिस तरफ़ अब्दुर्रहमान बिन ओफ रज़ियल्लाहु अन्हु हों वह ख़लीफ़ा हो। आख़िर पांचों अस्हाब ने मश्वरा किया (क्योंकि तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु उस वक़्त मदीना में थे) परन्तु कोई नतीजा बरामद न हुआ। बहुत लंबी बेहस के बाद हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि अच्छा जो व्यक्ति अपना नाम वापस लेना चाहता है वह बोले। जब सब ख़ामोश रहे तो हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि सबसे पहले में अपना नाम वापस लेता हूँ। फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा "कि मैं भी लेता हूँ" फिर अन्य दो ने "भी कहा।" हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ख़ामोश रहे। आख़िर उन्होंने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ रज़ियल्लाहु अन्हु से अह्द लिया कि वह निर्णय करने में कोई रियाइत नहीं करेंगे। उन्होंने अह्द किया और सब काम उनके सपुर्द हो गया।" अर्थात हज़रत अब्दुर्रहमान

बिन औफ़ के सपुर्द हो गया।'' हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ रज़ियल्लाहु अन्हु तीन दिन मदीना के हर घर गए और पुरुषों और महिलाओं से पूछा कि उनकी राय किस व्यक्ति के ख़िलाफ़त के हक़ में है। सब ने यही कहा कि उन्हें हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त मंज़ूर है। इसलिए उन्होंने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के हक़ में अपना निर्णय दे दिया और वह ख़लीफ़ा हो गए।"

(ख़िलाफ़त-ए-राशिदा, अनवारुल उलूम,भाग 15 पृष्ठ 484-485)

अल्लामा इब्ने सअद लिखते हैं कि हज़रत उस्मान बिन अफ़ान की 29 ज़ुल्हज्जा 23 हिज्री को पीर के दिन बैअत की गई

नज़्ज़ल बिन सब्राह वर्णन करते हैं कि जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा मुंतख़ब हुए तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया हमने पीछे रह जाने वालों में से सबसे बेहतरीन व्यक्ति का इंतेखाब किया है और हमने इस इंतेखाब में कोई कोताही नहीं की।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन होने के बाद जब पहला ख़िताब फ़रमाया तो उसके बारे में यह रिवायत है कि इस्माईल बिन इबराहीम बिन अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन अबू रबीया मख़्ज़ूमी अपने पिता से रिवायत करते हैं कि जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत की गई तो आप अर्थात हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु लोगों में तशरीफ़ लाए और उनसे ख़िताब फ़रमाया। जिसमें आप ने अल्लाह तआला की प्रशंसा वर्णन करने के बाद फ़रमाया। हे लोगो पहले-पहल जो काम किया जाए वह मुश्किल होता है। नया नया काम कोई पहली दफ़ा कर रहा हो तो मुश्किल होता है। आजके बाद और भी दिन आने वाले हैं यदि मैं ज़िंदा रहा तो इन-शा-अल्लाह तुम्हारे सामने मुनासिब ख़िताब भी कर सकूँगा। आज तो यह मुख़्तसिर ख़िताब कर रहा हूँ। आइन्दा दिन भी आएँगे में मुनासिब ख़िताब करूँगा। फिर फ़रमाया: हम कोई प्रवक्ता नहीं हैं परन्तु अल्लाह तआला हमें सिखा देगा। अल्लाह तआला ख़िताब करने के तरीक़े भी सिखा देगा।

(अल् तब्कातुल कुबरा लेइब्ने साअद, भाग तीन, पृष्ठ 35 उस्मान बिन उफान, दारुल अहया तुर्रास अरबी बेरूत 1996 ई.)

बदर बिन उस्मान अपने चचा से रिवायत करते हैं कि जब अहले शूरा ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत कर ली तो आप इस हाल में बाहर तशरीफ़ लाए कि आप उन सबसे ज़्यादा दुखी थे। फिर आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मंच पर आए और लोगों से ख़िताब किया। आप ने अल्लाह की प्रशंसा वर्णन की और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर दुरूद भेजा। फिर फ़रमाया! निसंदेह तुम लोग एक ऐसे घर में हो जिसे छोड़ जाना है अर्थात यह दुनिया और तुम जीवन के आख़िरी हिस्सों में हो इसलिए मौत से पहले-पहले जिस क़दर नेक काम कर सकते हो कर लो। यक़ीनन तुम मौत के घेरे में हो और यह दुश्मन सुबह या शाम तुम पर आक्रमण करने वाला है। ख़बरदार निसंदेह दुनिया छल कपट से भरी है। अत: तुम्हें दुनियावी ज़िंदगी धोखा न दे दे और अल्लाह के बारे में सख़्त धोखे बाज़ शैतान तुम्हें हरगिज़ धोखे में मुबतला न करे। गुज़रे हुए लोगों से इबरत हासिल करो और फिर भरपूर कोशिश करो और ग़ाफ़िल न रहो क्योंकि अल्लाह तआला तुम से ग़ाफ़िल नहीं। वह दुनिया-दार और उनके भाई कहाँ हैं जिन्हों ने ज़मीन को फाड़ा और उसे आबाद किया और एक लंबा अरसा इससे फ़ायदा हासिल करते रहे? क्या उसने उन्हें निकाल बाहर नहीं फेंका? अत: तुम भी दुनिया को वहां फेंक दो-जहाँ अल्लाह तआला ने उसे फेंका हुआ है और आख़िरत को तलब करो। आख़िरत को तलब करो क्योंकि अल्लाह तआला ने आख़िरत की मिसाल और उस वस्तु की जो बेहतरीन है मिसाल देते हुए फ़रमाया है :

وَ اضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا۔ اَلْمَالُ وَ الْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ الْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ اَمَلًا۔ الکھف: 46-47

अल्कहफ़ की यह आयात हैं। और उनके सामने दुनिया की ज़िंदगी की मिसाल वर्णन कर जो ऐसे पानी की तरह है जिसे हमने आसमान से उतारा। फिर इसके साथ ज़मीन की रोईदगी शामिल हो गई। फिर वह चूरा चूरा हो गई जिसे हवाएं उड़ाए लिए फिरती हैं और अल्लाह हर वस्तु पर पूरी तरह क़ादिर है। माल और औलाद दुनिया की ज़िंदगी की ज़ीनत हैं और अन्य रहने वाली नेकियां तेरे रब के नज़दीक सवाब के तौर पर बेहतर और उमंग के लिहाज़ से बहुत अच्छी हैं। इसके बाद लोग आप की बैअत करने के लिए लपके।

(तिब्री, भाग 5 पृष्ठ 87, ख़ुत्बा उस्मान व कत्ल उबैदुल्लाह बिन उमर अल्हुज़मान दारुल फ़िक्र बेरूत 2002 ई.)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर-ए-ख़िलाफ़त में जो फ़ुतूहात हुईं उनका वर्णन करता हूँ। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर ख़िलाफ़त में निमंलिखित इलाक़ों में अल्लाह तआला ने मुस्लमानों को फ़ुतूहात से नवाज़ा। फ़तह अफ्रीकीया यह जज़ायर और मराक़श के क्षेत्र हैं। फ़तह अंदलुस, स्पेन 27 हिज्री। फ़तह क़बरस, साइप्रस (cyprus)28 हिज्री। फ़तह तिब्रिस्तान 30 हिज्री। फ़तह सवारी। फ़तह अरमीनीया। फ़तह खुरासान 31 हिज्री। बिलादे रूम की तरफ़ पेशक़दमी मरूरूज़, ताआकान्, फ़ारीआब, जूज़ाजन और तखारिस्तान की फ़ुतूहात। बल, हरात की मुहिम 32 हिज्री। इसके अतिरिक्त इस अमर का वर्णन भी मिलता है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर में हिन्दोस्तान में इस्लाम की आमद हो गई थी। (उद्धरित सैर सहाबा, भाग प्रथम पृष्ठ 165 से 168 दारुल इशात कराची 2004)

(अल्बदयाह वन्नहाया, भाग 10 पृष्ठ 237 सुन्नता 31 दारे-हिज्र 1998 ई.) (तारीख़ तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 625 सुन्नता 31 हिज्री, और पृष्ठ 632 सन् 32 दारुल क़ुतुब आलमी बेरूत 1987 ई.) (बर-ए-सग़ीर में इस्लाम के अव्वलीन नुक़ूश अज़ मुहम्मद इसहाक़ भट्टी रिसर्च इंस्टीटियूट, पृष्ठ 65 से 63)

उन जंगो और फ़ुतूहात का मुख़्तसिर वर्णन इस प्रकार है :

27 हिज्री में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत साअद बिन अबी सरा को दस हज़ार फ़ौज देकर अफ़रीका रवाना फ़रमाया। अफ़रीका से मुराद वही मराक़श और अल-जज़ाइर का इलाक़ा है। अत: अल्लाह ने मुस्लमानों को फ़तह दी :

अंदलुस, 27 हिज्री, स्पेन। हज़रत उस्मान ने अब्दुल्लाह बिन नाफ़े बिन हुसैन फरही और अब्दुल्लाह बिन नाफ़े बिन अब्दे केस फ़हरी को अफ़रीका से अंदलुस की तरफ़ पेशक़दमी का आदेश दिया। अत: यह उनकी तरफ़ चले और मुस्लमानों को अल्लाह तआला ने फ़तह से नवाज़ा। (अल्बदयाह वन्नहाया लेइब्ने कसीर, भाग 7 पृष्ठ 147-148 सुन्नता 26,27 हिज्री, दारुल क़ुतुब आलमी बेरूत 2001 ई.)

फ़तह क़बरस 28 हिज्री। अबू मशअर का कथन है कि क़बरस 33 हिज्री में फ़तह हुआ। कुछ लोगों के अनुसार 27 हिज्री में क़बरस की जंग लड़ी गई। तारीख़ तिब्री और अल्बदयाह वन्नहाया ने इसको 28 हिज्री की घटना में वर्णन किया है। इस जंग में सहाबा में से हज़रत अबूज़र ग़फ्फारी रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उबादाह बिन सामित और आप की पत्नी उम्मे हिराम पुत्री मिल्हान, हज़रत मिक़दाद, हज़रत अबू दरदा, हज़रत शद्दअदद बिन ओस शामिल थे।

क़बरस शाम देश के पूर्वी ओर एक अकेला महाद्वीप है। इस में बाग़ात और खाने अत्यधिक थीं। कब्रस हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के समय में आप रज़ियल्लाहु अन्हु की इजाज़त और आदेश से अमीर मुआवीया के हाथ पर फ़तह हुआ। इस जंग में हज़रत उम्मे हिराम बिंत मिलहान भी शामिल थीं जिन को आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने शहादत की ख़बर पहले ही दे दी थी। इस जंग से वापस आने पर आप के लिए सवारी लाई गई । आप उस पर सवार हुईं लेकिन उस पर से गिर पड़ी और आपकी गर्दन की हड्डी टूट गई जिससे आपकी शहादत हो गई।

(तारीख़ तिबरी, भाग 5 पृष्ठ 96 सुन्नता 28, दारुल फ़िक्र 2002 ई.)(अल्बदयाह वन्नहाया कसीर, भाग 7 पृष्ठ 148-149 सन् 28 हिज्री, दारुल क़ुतुब आल्मी बेरूत 2001ई.)

यह वर्णन अभी चल रहा है। आइन्दा भी इन-शा-अल्लाह वर्णन होगा।

दुआ की तरफ़ तो आज भी मैं तवज्जा दिलाता हूँ। पाकिस्तान के अहमदियों के लिए दुआ करते रहें। अल्लाह तआला उनके हालात बेहतर करे। उनको पाकिस्तान में रहने वाले अहमदियों को भी दुआओं की तौफ़ीक़ दे। अपनी इस्लाह की भी तौफ़ीक़ दे। अल्लाह तआला से सम्बन्ध बढ़ाने की भी तौफ़ीक़ दे और अल्लाह तआला जल्द ये अंधेरे दिन हैं रौशनियों में बदल दे और हम वहां के अहमदियों को भी आज़ादी के साथ अपने फ़राइज़ अदा करते देखें।

(अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 26 फ़रवरी 2020 पृष्ठ 5 से 10)

☆ ☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

अत्यधिक वफ़ादारी के साथ उन्होंने समस्त हक़ अदा किए। अल्लाह तआला उनके दर्जात बुलंद फ़रमाए और ख़िलाफ़त को इन जैसे सुलतान नसीर मिलते रहें

लंबे अरसा से अफ़्सर जलसा सालाना पाकिस्तान चले आने वाले, ग़ैरमामूली विशेषताओं से परिपूर्ण, दरवेश सिफ़त और अत्यधिक मेहनती अतुल्य ख़ादिम-ए-सिलसिला मुहतरम चौधरी हमीदुल्लाह साहिब वकीले आला और सदर मज्लिस तहरीके जदीद अंजुमन अहमदिया का वर्णन।

मैंने एक मुख़लिस बच्चे को जिसका हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से शरीरिक सम्बन्ध तो न था लेकिन रुहानी सम्बन्ध बहुत पुख़्ता था ख़ुद्दामुल अहमदिया की सदारत सौंपी। अल्लाह तआला ने उसे काम करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई और उस की कोशिशों में बरकत डाली और हमारी दुआओं को क़बूल फ़रमाया। (हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस)

मैंने भी कुछ वाकफ़ीन को उनके सपुर्द किया कि उनकी तर्बीयत करें और उन्होंने बड़ी अच्छी तरह उनकी तर्बीयत की

अप्रैल 2003 ई. में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबा रहमहुल्लाह तआला की वफ़ात के अवसर पर इंतेखाब ख़िलाफ़त के इज्लास की सदारत का सम्मान भी उन्हें प्राप्त हुआ।

आप हमेशा दो बातों पर-ज़ोर देते थे कि नमाज़ें और ख़लीफ़-ए-वक़्त का ख़ुतबा किसी सूरत में miss नहीं करना चाहिए और ख़लीफ़-ए-वक़्त ने जो भी इरशाद फ़रमाए हैं उन पर भरपूर अनुकरण करना चाहिए।

आपका उठना बैठना ,खड़े होना, चलना बोलना और ख़ामोश रहना ख़लीफ़ा वक़्त के अधीन था।

समय के ख़लीफ़ा की प्रत्येक आवाज़ को और हर आदेश को बड़ी संजीदगी से लिया और मौखिक नहीं बल्कि पूर्णतः उस पर अनुकरण किया। कभी कोई तावीलें नहीं दी कि इस की यह तावील होती है या यह तावील होती है

पाकिस्तान में अहमदियों की शदीद मुख़ालिफ़त के पेश-ए-नज़र विशेष दुआओं की पुनः तहरीक

विश्वव्यापी महामारी कोरोना वायरस से बचाओ के लिए मुकम्मल हिफ़ाज़ती तदाबीर इख़तियार करने का आदेश

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 12 फ़रवरी 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज मैं जमाअत के एक महान ख़ादिम श्रीमान चौधरी हमीदुल्लाह साहिब का वर्णन करना चाहता हूँ जिन की पिछले दिनों में वफ़ात हुई। आप तहरीके जदीद पाकिस्तान के वकीले आला थे। सदर मज्लिस तहरीके जदीद अंजुमन अहमदिया थे और एक लंबे अर्से से अफ़्सर जलसा सालाना की ख़िदमत पर भी आधारित थे। 7 फरवरी को ताहिर हार्ट इंस्टीटियूट में 87 की उमर में उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

श्रीमान चौधरी साहिब के पिता का नाम बाबू मुहम्मद बख़श साहिब और माता का नाम आईशा बी-बी साहिबा था। ये लोग भेरा के नवाही क्षेत्र के रहने वाले थे। चौधरी साहिब 1934 ई. में क़ादियान में पैदा हुए। उनके पिता ने उनकी पैदाइश से कोई पाँच वर्ष पहले अहमदियत क़बूल की थी। वह अपनी क़बूले अहमदियत की घटना इस प्रकार वर्णन करते हैं। कहते हैं कि मैं ख़ुदा तआला की क़सम खा कर एक स्वप्न लिख रहा हूँ। और इस स्वप्न के बारे में जो तफ़सील वर्णन करते हैं वह यह है कि यह विभाग नहर में काम करते थे तो बंगला में यह रहते थे। या दौरे पर यह फिरते रहते थे तो इस दौरान उन्होंने वहां रात गुज़ारी। कहते हैं कि बंगला बक्खोवाला सरगोधा में अक्तूबर के महीने में 1929 ई. समय क़रीबन दो बजे रात को यह दृश्य देखा कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तशरीफ़ फ़र्मा हैं, कहते हैं कि मैंने स्वप्न में दृश्य देखा कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम एक विषय पर तशरीफ़ फ़र्मा हैं और रानों पर दोनों हाथ रख कर बैठे हुए हैं जिस तरह उंगलीयों पर ज़िक्रुल्लाह कर रहे हैं। पवित्र चेहराम पूर्व की तरफ़ है। मुझे फ़रमाया कि जिस कुर्सी पर तुम बैठे हो उस की चूलें ढीली हो चुकी हैं। कहते हैं इस पर मैं तुरन्त उठा और देखा तो एक चूला ढीली था। मैंने शुक्रिया अदा किया और कहा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ग़ुलाम की जान बचा ली है। आगे या पीछे गिरता तो सिर फूट जाता। थोड़ी देर बाद रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हाथ मुबारक में एक नई दफ़्तरी कुर्सी है जिसके Arms आगे बढ़े हुए हैं। फ़रमाया इस कुर्सी पर बैठ जाओ। यह अहमदियत की कुर्सी है अर्थात तर्कों के साथ और वास्तविक इस्लाम है। इसके बाद बंदा जाग गया। यह उनके पिता की अहमदियत क़बूल करने की घटना है।

(उद्धरित बिशाराते रहमानिया पृष्ठ 157)

चौधरी साहिब ने आरंभिक शिक्षा क़ादियान में हासिल की। आठवीं जमाअत के विद्यार्थी थे जब 1946 ई. में हज़रत मुसल्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने वक़्फ़ की तहरीक की। जो तहरीक की हुई थी इस पर लब्बैक कहते हुए आप के पिताा आप को हज़रत मुसल्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में ले गईं और हुज़ूर से अर्ज़ किया कि यह मेरा बच्चा है मैं इस को ख़िदमत दीन के लिए वक़्फ़ करती हूँ। इसके बाद हज़रत मुसल्लेह मौऊद ने कुछ हिदायात दीं कि इसको आइन्दा स्कूल में पढ़ाती रहें। 1949 ई. में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की। फिर वकालत दीवान रबवाह की हिदायत पर इंटरव्यू के लिए रबवाह तशरीफ़ लाए। लिखित परीक्षा के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ुद उनका इंटरव्यू लिया। उस वक़्त अंजुमन अहमदिया के नाज़िरान की मीटिंग हो रही थी हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी मीटिंग में बैठे थे। जो भी उस वक़्त तीन चार लड़के थे आपने वहीं उनको बुला लिया। चौधरी हमीदुल्लाह साहिब थे, मुसल्लेह उद्दीन साहिब थे, समीउल्लाह साहिब थे। तो बहरहाल ख़लीफ़तुल मसीह सानी ने इंटरव्यू लिया और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी की हिदायत पर उनकी शिक्षा का सिलसिला चलता रहा और स्कूल और यूनीवर्सिटी की शिक्षा हासिल की। हज़रत ख़लीफ़ सानी के इरशाद पर उन्होंने बी.एस.सी. की। बी. एस. सी. में राज्य भर में दूसरी पोज़ीशन प्राप्त की। फिर पंजाब यूनीवर्सिटी लाहौर से फ़रस्ट डवीज़न में एम.ए. रियाज़ी किया। 1955 ई. में तालीमुल इस्लाम कॉलेज में उस्ताद निर्धारति हुए और फिर सदर विभाग रियाज़ी भी निर्धारति हुए।

(उद्धरित तारीख़-ए-अहमदियत भाग 10 पृष्ठ 104, 120)

उनकी शादी 1960 ई. में रज़ीया ख़ानम साहिबा से हुई जो अब्दुल जब्बार ख़ान साहब सरगोधा की बेटी थीं। 1974 ई. तक टी. आई. कॉलेज रबवाह में ख़िदमात सरअंजाम देते रहे। कॉलेज के कौमियाए जाने के बाद हज़रत ख़लीफ़ सालिस रहमहुल्लाह तआला की हिदायत पर आपने कॉलेज से अस्तीफ़ा दे दिया क्योंकि वक़्फ़-ए-ज़िंदगी थे और कॉलेज अब नेशनलाइज़ड (nationalized) हो गए थे इसलिए कोई जवाज़ नहीं था कि हुकूमत के इदारे में पढ़ाऐं तो जो वाकिफ-ए-ज़िंदगी थे उनमें से कुछ को, सारों को नहीं, हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस ने यही हिदायत दी थी कि वहीं कॉलेज में काम जारी रखें वहां भी ज़रूरत है और कुछ को यही मश्वरा दिया, यही हिदायत की कि वे जमाअत की ख़िदमत में आ जाएं। बहरहाल उन्होंने जब वहां से अस्तीफ़ा दिया तो उनको हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह

सालिस ने नाज़िर ज़यााफ़त निर्धारति किया। 1982 ई. में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला ने आपको वकील आला तहरीके जदीद निर्धारति फ़रमाया। इसके साथ ही कुछ अरसा तक आप ऐडीशनल सदर मज्लिस तहरीके जदीद भी रहे। फिर 1989 ई. (eighty-nine) में जो जुबली वर्ष था इस में आप सदर मज्लिस तहरीक जदीद निर्धारति हुए और वफ़ात तक यह ख़िदमात करते रहे। इसके अतिरिक्त आप 1986 ई. ता वफ़ात तक ऐडीशनल नाज़िर आला के तौर पर सिंध वग़ैरा के हंगामी हालात के भी निगरान रहे।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह के ज़माने में आपको रबवाह में अमीर स्थान ी बनने का भी सम्मान हासिल हुआ

(उद्धरित तारीख़-ए-अहमदियत भाग 28 पृष्ठ 112, 335)

मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया स्थानीय रबवाह और मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया मर्कज़िया में मुख़्तलिफ़ हैसियतों से ख़िदमात बजा लाते रहे और इसके बाद 1969 ई. से 1973 ई. तक बतौर सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया मर्कज़िया निर्धारति हुए। उस ज़माने में सारी दुनिया में एक ही मर्कज़ी ख़ुद्दामुल अहमदिया थी और मर्कज़ से इसका कंट्रोल होता था। हर मुल्क में अलग अलग सदर नहीं निर्धारति होता था।

1969 ई. में जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस ने उनको सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया मर्कज़िया निर्धारति फ़रमाया तो उस अवसर पर हुज़ूर ने जो बातें की हैं वे बड़ी ज़रूरी बातें हैं। जबकि यह इक़तिबास लंबा है जो मैं हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस की तक़रीर से लूँगा लेकिन यह बड़ा ज़रूरी है क्योंकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जस्मानी औलाद के लिए भी और रुहानी औलाद के लिए भी, जमाअत का काम करने वालों के लिए भी यह हिदायात और ये बातें ऐसी हैं जो उनको पल्ले बांधनी चाहिऐं और उन पर अमल करने की कोशिश करनी चाहिए और फ़िक्र करनी चाहिए कि क्या हम वे हक़ अदा कर रहे हैं कि नहीं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस ने फ़रमाया कि "सदर बनने वाले नौजवान के लिए भी दुआ करनी चाहिए और इस ओहदे से हटने वाले मुख़लिस नौजवान के लिए भी दुआ करनी चाहिए। अल्लाह तआला उनकी कोशिशों को क़बूल करे और आने वाले को यह तौफ़ीक़ दे कि वह अल्लाह तआला की मदद से पहलों से ज़्यादा काम करके अब दिखाएंगे।" फ़रमाया कि "हम किसी जगह पर ठहर नहीं सकते। हमारा हर व्यक्ति जिस पर नए सिरे से ज़िम्मेदारी डाली जाती है उनको पहलों से आगे निकलने की कोशिश करनी चाहिए क्योंकि जमाअत में अल्लाह तआला के फ़ज़ल से फैलाओ और वुसअत आ रही है। जमाअत के काम भी बढ़ रहे हैं। इसकी ज़िम्मेदारियाँ भी बढ़ रही हैं। उद्देश्य मैं बता रहा था कि जिन्हों ने मज्लिस की सदारत का चार्ज लिया है वे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के ख़ूनी रिश्ता के लिहाज़ से ख़ानदान के व्यक्ति नहीं हैं" (चौधरी साहिब से पहले प्रकाशितद मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह राबे) सदर थे और उनका ख़ूनी रिश्ता था तो बहरहाल आपने फ़रमाया कि ख़ूनी रिश्ता तो नहीं है, यह ख़ानदान के व्यक्ति नहीं हैं ''लेकिन रुहानी रिश्ता के लिहाज़ से हर व्यक्ति अपनी हिम्मत और कोशिश और अपनी दुआ और विनम्रता के नतीजा में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की रुहानी औलाद बनने के योग्य है और सच्चा और हक़ीक़ी रुहानी बेटा उसे बनना चाहिए। और बहुत से लोग हैं जो शरीरिक औलाद से भी अधिक आगे निकल जाते हैं हालाँकि वे केवल रुहानी औलाद होते हैं। शरीरिक सम्बन्ध तो एक दुनियावी सम्बन्ध है। धर्म या रूहानियत से इस का कोई सम्बन्ध नहीं है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम का अपनी औलाद से असल सम्बन्ध रुहानी सम्बन्ध ही है" और यह बात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जो शरीरिक सम्बन्ध रखने वाले हैं, या ख़ूनी सम्बन्ध रखने वाले रिश्तेदार हैं उनको याद रखनी चाहिए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम का अपनी औलाद से असल सम्बन्ध रुहानी सम्बन्ध ही है। "इसी वास्ते कहा गया है कि (न ही अनबया किसी के वारिस होते हैं और न आगे विरसा में कुछ देते हैं) क्योंकि विरसा का सम्बन्ध रक्त के एक होने से है इस की नफ़ी कर दी गई है लेकिन जहां तक रुहानी लाभ का सम्बन्ध है वही हक़ीक़त, वही सदाक़त और वही हिक्मत है। वही दरअसल सही अर्थों में किसी व्यक्ति की रुहानी औलाद है जिसने अल्लाह तआला के आदेश को उसकी मंशा और आदेश के अनुसार क़ायम किया और हर व्यक्ति अपने इख़लास और श्रद्धा के अनुसार अपना प्रतिफल पाता है। अत: असल में यही रुहानी औलाद एक रुहानी वजूद की औलाद है। उसकी शरीरिक औलाद कोई नहीं होती।

असल में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम वस्सलाम की रुहानी औलाद ही हक़ीक़ी औलाद है उसी वास्ते आपने अपनी शरीरिक औलाद के सम्बन्ध में फ़रमाया है कि अल्लाह तआला ने मेरी दुआ को क़बूल किया और उनका रुहानी वजूद बना दिया। यदि केवल शरीरिक औलाद होने में कोई ख़ूबी होती तो आपको न उन दुआओं के करने की ज़रूरत थी न उन्नकी क़बूलीयत की ज़रूरत होती। अत: असल वस्तु यह है कि रुहानी रिश्ता मज़बूत हो चाहे शरीरिक सम्बन्ध न भी हो। इस वास्ते वे लोग भी ग़लती पर हैं जो यह समझते हैं कि केवल शरीरिक औलाद होना कोई बड़ाई है। कुछ लोग इस्लाम में ऐसे भी हुए जिन्हों ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की औलाद से केवल इसलिए दुश्मनी की कि वे आपकी शरीरिक औलाद थे। लेकिन यह भी ग़लत है कि चूँकि शरीरिक औलाद थे इसलिए उनको इज़्ज़त हासिल हो गई लेकिन इस रिश्ता के नतीजा में कोई उन्हें बुज़ुर्गी देता है तो वह मंद्बुधि है।" (ये बातें दोनों इस में आ गईं कि जो इसलिए दुश्मनी करते हैं) कि शरीरिक औलाद है वे भी ग़लत करते हैं और यदि कोई इज़्ज़त देते हैं और बुज़ुर्गी देते हैं तो वे भी ग़लत करते हैं। फ़रमाया कि "इस के अंदर कोई रूहानियत नहीं है। कोई अक़्ल नहीं है" (जो ये समझता है)। "असल सम्बन्ध रूहानियत का है। शरीरिक औलाद में यदि यह सम्बन्ध मज़बूती के साथ क़ायम हो जाए, उनमें ईसार और क़ुर्बानी और बे-नफ़सी पैदा हो जाए तो अल्लाह तआला उनको भी प्रितिफाल देता है और अपने क़ुरब और रज़ा से नवाज़ता है।" (शरीरिक औलाद में ये सम्बन्ध और पुख़्तगी यदि क़ायम हो गई है, नबी का जो रुहानी फ़ैज़ है वे हासिल कर लिया है तो फिर अल्लाह तआला प्रितिफाल भी देता है और अपने क़ुरब और रज़ा से नवाज़ता है) ''और जिसने शरीरिक औलाद न होने के बावजूद रुहानी प्रभाव को क़बूल करके अपने आपको दुनिया की निगाह में हक़ीक़ी औलाद जैसा बना दिया उसके सम्बन्ध में यह कहना कि केवल इस कारण से कि चूँकि शरीरिक सम्बन्ध नहीं है इसलिए वे ख़ुदा तआला की निगाह में इज़्ज़त और सम्मान नहीं पा सकता यह भी ग़लत है।" (अत: शरीरिक सम्बन्ध न भी हो तो रुहानी औलाद बन के यदि उसका हक़ अदा कर दिया है तो वे सम्मान पा गया और इस के सम्बन्ध में यह कहना कि इज़्ज़त और सम्मान नहीं पाता वो ग़लत कहता है।)

फिर फ़रमाते हैं कि दोनों बातें ग़लत हैं। असल मार्ग मुस्तक़ीम (सदमार्ग) है कि जो व्यक्ति अल्लाह तआला की निगाह में इज़्ज़त और सम्मान हासिल कर लेता है वही सफ़ल होता है। वे अपनी अपनी शक्तियों के अनुसार ख़ुदा तआला के दीन के काम करने की तौफ़ीक़ पाता है। अल्लाह तआला उसकी कोशिशों को क़बूल करता है चाहे उसका युग के भेजे हुए अवतार से शरीरिक सम्बन्ध हो या न हो। अत: वे लोग जो यह कहते हैं कि चूँकि उनका शरीरिक सम्बन्ध है इसलिए उनको बड़ा कहना चाहिए वे भी अनुचित बात करते हैं और वे लोग जो ये समझते हैं कि चूँकि शरीरिक सम्बन्ध है इसलिए अच्छे हो गए हैं और उन्होंने विरसा में इज़्ज़त और एहतिराम को पा लिया है यह भी ग़लत है। इस तरह पर तो विरसा में किसी को इज़्ज़त और एहतिराम नहीं मिला करता। अत: जो व्यक्ति यह समझता है कि चूँकि शरीरिक रिश्ता नहीं है इसलिए इकराम और बुज़ुर्गी नहीं मिल सकती यह ग़लत है। उद्देश्य जो व्यक्ति ये समझता है कि शरीरिक सम्बन्ध है इसलिए ज़रूर बुज़ुर्गी मिल जाएगी यह भी ग़लत है। असल में रुहानी सम्बन्ध नाम है तक़्वा इख़तियार करने का। अल्लाह तआला से ज़ाती मुहब्बत पैदा करने का। अल्लाह तआला के लिए ईसार और क़ुर्बानी करने का। अपने नफ़्स पर एक मौत वारिद करने का। अपने आपको कुछ भी न समझने का। अपनी फ़ना के बाद अल्लाह तआला से एक नई और पाक ज़िंदगी को हासिल करने का। ये असल सम्बन्ध है, इस के बग़ैर तो कोई सम्बन्ध सम्बन्ध ही नहीं।

फ़रमाया उद्देश्य अल्लाह तआला के फ़ज़ल से पिछले तीन वर्षों में ख़ुद्दामुल अहमदिया ने विशेष तरक़्क़ी की है लेकिन पहाड़ों की बुलंद चोटियों की तरह ख़ुद्दामुल अहमदिया के लिए कोई एक चोटी निर्धारति नहीं कि जहां जा कर वे यह समझें कि बस अब हम आख़िरी बुलंदी पर पहुंच गए। हमारा काम ख़त्म हो गया। यह तो ऐसे पहाड़ की चढ़ाई है कि जिसकी चोटी कोई है ही नहीं क्योंकि यह वह पहाड़ है जिसके ऊपर ख़ुदा की असीम क्रपा है और इन्सान और अल्लाह तआला के मध्य जो दूरी है वह असीमित है और हमें यह कोशिश करनी चाहिए और इसी में हमारी ज़िंदगी और हयात है कि हम किसी जगह पर थक कर बैठ न जाएं या किसी जगह ठहर कर यह न समझ लें कि हमने जो हासिल करना था कर लिया। नहीं, हमारे लिए असीमित प्रगतियाँ और बुलंदियां निर्धारित की गई हैं और यदि हम कोशिश करें और सच में अल्लाह तआला हमारे दिल में इख़लास और ईसार और मुहब्बत अपने लिए महसूस करे तो वे हम पर फ़ज़ल नाज़िल करता चला जाएगा और करता चला जाता है जिसके नतीजा में इन्सान ख़ुदा तआला से और ज़्यादा प्यार

हासिल करता है और अपने नफ़्स से वे और ज़्यादा दूर और बेगाना हो जाता है।
(उद्धरित मिशअल-ए-राह भाग 2 पृष्ठ 212 से 214)

अत: ये शब्द जो आप ने चौधरी साहिब को नसीहत फ़रमाए और चौधरी साहिब के कारण से आज हम में भी ये शब्द पहुंचे ये भी जब हर वाक़िफ़-ए-ज़िंदगी और हर काम करने वाला और जो ख़ानदान का सम्बन्ध रखने वाला हर फ़र्द है वे भी इन बातों पर ग़ौर करे तो चौधरी साहिब के दर्जात की बुलंदी के लिए भी दुआ करे कि उनके कारण से यह सुनहरी शब्द हमें सुनने को और समझने को मिले।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह तआला ने आपके बारे में 1970 ई. के इजतिमा ख़ुद्दामुल अहमदिया मर्कज़िया से ख़िताब करते हुए फ़रमाया :

मैंने एक मुख़लिस बच्चे को जिसका हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से शरीरिक सम्बन्ध तो न था लेकिन रुहानी सम्बन्ध बहुत पुख़्ता था ख़ुद्दामुल अहमदिया की सदारत सौंपी। अल्लाह तआला ने उसे काम करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई और उसकी कोशिशों में बरकत डाली और हमारी दुआओं को क़बूल फ़रमाया।

(उद्धरित तारीख़ अहमदियत भाग 26 पृष्ठ 214)

जब उनको अपनी टर्म पूरा करके ख़ुद्दामुल अहमदिया की ख़िदमत 'सदर' से फ़राग़त हुई तो उस वक़्त विदाई समारोह में जो सपास नामा उनको प्रस्तुत किया गया था उस में यह लिखा गया और उनके बारे में जो भी लिखा गया इस में निसंदेह कोई बढ़ोतरी नहीं। आज का यह आयोजन चौधरी साहिब के लिए निर्धारति किया गया है। चौधरी हमीदुल्लाह साहिब का चारवर्ष का सदारत के समय तारीख़ ख़ुद्दामुल अहमदिया में एक कीमती अध्याय को बढ़ता है। इस में ख़ुद्दामुल अहमदिया विश्वव्यापी ने अपनी कैफ़ीयत और कमीयत की दृष्टि से हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की विशेष रहनुमाई में (ख़िलाफ़त सलिसा के दौर की बात है) हर विभाग में विशेष काम किया। चौधरी हमीदुल्लाह साहिब ने अत्यधिक विनम्रता, बे-नफ़सी और निरंत मेहनत के साथ नौजवान नसल में इताअत और वफ़ा की केशी और ख़िलाफ़त से वाबस्तगी जैसी दिलकश विशेषताओं को उजागर किया जो उनके भविष्य के लिए निशान-ए-राह साबित होंगी। इन-शा-अल्लाह । आप के सदारत के समय में सय्यदना हज़रत अमीर-ऊल-मोमनीन ख़लीफ़तुल मसीह सालिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल की ख़ाहिश के अनुसार ख़ुद्दामुल अहमदिया ने हर विभाग में विशेष तरक़्क़ी की। आप के सदारत के समय में हज़रत मुसल्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के कीमती उपदेशों को किताबी शक्ल में मशअले-राह के नाम से प्रकाशित की गई। अतफ़ालुल अहमदियत के लिए पुस्तक "याद रखने की बातें" प्रकाशित हुई। मज्लिस मर्कज़िया का उमूमी और विशेष माली निज़ाम मज़बूत हुआ। आप हमेशा इस तरीक़ पर मुहब्बत और फ़दाईत के साथ सख़्ती से कारबन्द रहे कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह के हर आदेश और इशारे की दिल और जान से इताअत की जाए और हुज़ूर के जुमला आदेशों की शब्द और अर्थ दोनों के अनुसार तामील में हर संभव कार्य को किया जाए। सदारत की अज़ीम ज़िम्मेदारी से पूर्व मुख़्तलिफ़ वक़्तों में आपको मर्कज़ी मज्लिस-ए-आमला के मेम्बर के तौर पर ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ मिली।

(उद्धरित पत्रिका ख़ालिद दिसंबर 1973 ई. रबवाह पृष्ठ 3-4)

इस अल्-विदाईया आयोजन में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह तआला भी शामिल हुए थे। आपने भी मुख़्तसिर ख़िताब फ़रमाया। इसका भी मुख़्तसिर हिस्सा में यहां पेश करता हूँ।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस ने फ़रमाया। जाने वाले के सम्बन्ध में तो दुआ है कि अल्लाह तआला अहसन प्रितिफाल दे और आने वाले के सम्बन्ध में यह दुआ है कि अल्लाह तआला बेहतरीन और मक़बूल ख़िदमत की तौफ़ीक़ अता करे। मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया विभिन्न समयों में से गुज़र कर इस स्थान तक पहुंची है जहां दुनिया उसे आज देख रही है। आरंभ इसका एक छोटे से बीज की भांति था और इस वक़्त एक सेहत मंद भरपूर जवानी वाले ख़ूबसूरत दरख़्त की शक्ल यह बीज इख़तियार कर गया है। हर सदारत ने अपनी सदारत के ज़माने में दो काम किए। किसी ने बहुत ही अच्छे ढंग से और किसी ने मध्य तरीक़ पर और किसी ने अपना वक़्त गुज़ारा कुछ पहलूओं के लिहाज़ से। बहरहाल दो काम किए हर सदारत ने। एक जो रिवायात बन चुकी थीं उनको क़ायम रखने की कोशिश की, और दूसरे जो ज़रूरीयात पैदा हो चुकी थीं उनसे निमटने के लिए कोशिश की। नई-नई बातें डिवेलप होती हैं, नई ज़रूरीयात पैदा होती हैं उनसे निपटने के लिए कोशिश की। एक ज़िंदा वजूद को यही दो काम करने पड़ते हैं। फिर फ़रमाया मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया की ज़िंदगी क़ियामत तकके लिए है क्योंकि इस तंज़ीम का सम्बन्ध नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इस महदी की जमाअत के साथ है जिस के सम्बन्ध में यह ख़ुशख़बरी दी गई है कि क़ियामत तक वे ज़िम्मेदारियाँ जिनका सम्बन्ध उसूलन भी और तफ़सीलन भी उम्मत मुहम्मदिया से और इस्लाम से होगा उसकी जमाअत पर डाली जाएँगी। चूँकि जमाअत अहमदिया की ज़िंदगी क़ियामत तक है इसलिए जमाअत अहमदिया की समस्त ज़ेली तन्ज़ीमों की ज़िंदगी भी क़ियामत तक है और हर दौर जिस में से बुनियादी तंज़ीम, असली तंज़ीम अर्थात जमाअती तंज़ीम या उसकी ज़ेली तंज़ीमें जिस में से गुज़रीं हर दौर में पहली ख़ूबसूरती और हसन और जमाल को महफ़ूज़ रखना और इसमें ज़्यादती करते चले जाना यह फ़र्ज़ बन जाता है उन लोगों का जिनके हाथ में इस की क़ियादत दी जाती है।

फिर फ़रमाया हम कहीं ठहर नहीं सकते क्योंकि ठहरना मौत के समान है। यह एक बुनियादी उसूल है ज़िंदगी का। अत: इस बात को हमारी हर सतह पर हर तंज़ीम को और निज़ाम जमाअत के भी हर ओहदेदार को हमेशा याद रखना चाहिए कि हम कहीं ठहर नहीं सकते क्योंकि ठहरना मौत के मुतरादिफ़ है। यह एक बुनियादी उसूल है ज़िंदगी का। फ़रमाया कि हर नए आने वाले सदर पर पहले से ज़्यादा ज़िम्मेदारियाँ आयद होती हैं क्योंकि इससे पहले के सदर ने दो वर्ष पहले से क़बल की हालत को क़ायम रख के आगे बढ़ना है। पहला सदर जो काम करके दे गया है उसको आगे बढ़ाना है। फ़रमाया कि काम में वुसअत पैदा होती है। नई हिदायात मरकज़ी हिदायत अर्थात ख़िलाफ़त से जारी होती हैं। ख़लीफ़ा वक़्त से नई हिदायात मिलती हैं। नई ज़िम्मेदारियाँ नए हालात के अनुसार डाली जाती हैं। पुरानी रवायात को क़ायम भी रखना होता है और नई जरूरतों के हुसूल के लिए और नए मसाइल के समझने के लिए नई कोशिश नए अज़्म के साथ भी की जाती है।

फिर फ़रमाया कि अल्लाह तआला अज़ीज़ भाई और बच्चे हमीदुल्लाह साहिब को जो उन्होंने जमाअत के लिए किया जिस रंग में ज़िम्मेदारीयों को निभाया इस पर उन्हें अहसन प्रितिफाल दे और उन्हें भी तौफ़ीक़ दे कि दीन की मज़ीद जो ज़िम्मेदारियाँ दूसरे विभागों की, जिस रंग में भी उनके कंधों पर पड़ीं आख़िर वक़्त तक उन्हें वह इसी तरह ख़ुश-उस्लूबी से निभाते चले जाएं और अदा करते चले जाएं।

(उद्धरित मिशअल-ए-राह भाग 02 पृष्ठ 414-415 ख़िताब फ़र्मूदा 1 दिसंबर 1973 ई.)

1974 ई. के हंगामी हालात में भी चौधरी साहिब ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस की हिदायत के अनुसार जो हंगामी सेल क़ायम हुआ था इस में अहम ख़िदमात सरअंजाम दीं। (सिलसिला अहमदिया भाग 03 पृष्ठ 281)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला के लंदन हिज्रत के बाद हुज़ूर के इरशाद पर यहां आए और एक से ज़ाइद अरसा यहां रहे और यहां भी जो जमाअती मर्कज़ी निज़ाम था इसको क़ायम करने और इसको सेट करने में उन्होंने काफ़ी भूमिका निभाई। 1982 ई. से 1999 ई. तक बतौर सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। उस वक़्त अरसा की शर्त नहीं होती थी। यह तक़रीबन 17 वर्ष सदर अन्सारुल्लाह रहे। फिर अन्सारुल्लाह में जब सदर थे तो अन्सारुल्लाह के सम्बन्ध में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु के इर्शादात पर मुश्तमिल "सबीलुलरिशाद" की पहली जिल्द तैयार करके प्रकाशित की गई। गेस्ट हाऊस में तामीर का काफ़ी काम हुआ।

(अन्सारुल्लाह रबवाह जनवरी 2000 ई. पृष्ठ 15 से 17)

जमाअत अहमदिया की 1989 ई. की जो सादसाला जुबली मंसूबा बंदी कमेटी थी उसके सदर की हैसियत से भी ख़िदमत सरअंजाम दी। इससे क़बल आपको सैक्रेटरी सादसाला अहमदिया जुबली मंसूबा बंदी कमेटी के तौर पर सेवा करने की तौफ़ीक़ मिली। 2005 ई. में मर्कज़ी कमेटी ख़िलाफ़त अहमदिया सादसाला जुबली 2008 ई. के सदर के तौर पर भी ख़िदमात बजा लाते रहे 2005 ई. में सदर ख़िलाफ़त अहमदिया जुबली कमेटी निर्धारति हुए थे, जो ख़िलाफ़त अहमदिया सदसाला जुबली की मर्कज़ी कमेटी थी और इसका चूँकि काम मुस्तक़िल था तो अब तक यह उसकी सदारत करते रहे। अभी भी कुछ चीज़ें उसकी प्रकाशित हो रही हैं।

अप्रैल 2003 ई. में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला की वफ़ात के अवसर पर इंतेखाब ख़िलाफ़त के इज्लास की सदारत का सम्मान भी उन्हें नसीब हुआ। बतौर वकीले आला आप ने अफ़्रीक़ा और यूरोप समेत अत्यधिक देशों के दौरे भी किए

1973 ई. में मुहतरम सय्यद मीर दाऊद अहमद साहिब की वफ़ात पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह तआला ने आप को अफ़्सर जलसा सालाना

निर्धारति कर दिया। 1973 ई. ता वफ़ात आप बतौर अफ़्सर जलसा सालाना ख़िदमात सरअंजाम देते रहे। जबकि पाकिस्तान में 1983 ई. के बाद जलसे तो नहीं हुए लेकिन बाक़ायदा निज़ाम वहां क़ायम था और इस को यह नहीं कि उन्होंने छोड़ दिया। बाक़ायदा हालात के अनुसार अप डेट करते रहे कि जब भी अल्लाह तआला तौफ़ीक़ दे जब भी हालात बेहतर हों और जलसा हो तो ज़्यादा से ज़्यादा तादाद को हम किस तरह सँभाल सकते हैं और उनमें ये बड़ी इंतिज़ामी सलाहीयत थी उसके अनुसार उन्होंने काम किया। अफ़्सर जलसा सालाना बनने से पहले आप मुख़्तलिफ़ हैसियतों से जलसा सालाना के निज़ाम में भी काम करते रहे। जलसा सालाना क़ादियान जो 1991 ई. में हुआ। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे वहां गए थे। उनको हुज़ूर ने अफ़्सर जलसा सालाना निर्धारति फ़रमाया और फिर उनकी तारीफ़ करते हुए ख़ुतबा में फ़रमाया कि "पाकिस्तान से चौधरी हमीदुल्लाह साहिब और मियां ग़ुलाम अहमद साहिब ने बड़े लंबे अरसा तक बहुत मेहनत की है और क़ादियान जा कर वहां के मसाइल को समझा और मेरी हिदायात के अनुसार हर किस्म की तैयारी में बहुत ही उम्दा ख़िदमात सरअंजाम दी हैं अन्यथा क़ादियान की अहमदी आबादी इतनी छोटी है कि उनके बस में नहीं था कि इतने बड़े इंतिज़ाम को सँभाल सकते।"

(दौरा क़ादियान 1991ई. पृष्ठ 171)

1977 ई. में उनको अफ़्सर जलसा सालाना रबवाह के अतिरिक्त नाज़िर ज़यायफ़त भी निर्धारति किया गया। 1977 ई. से 1987 ई. तक बतौर नाज़िर ज़यायफ़त ख़िदमात सरअंजाम देते रहे।

आपके पीछे रहने वलो में आपकी पत्नी रज़ीया ख़ानम के अतिरिक्त एक बेटा और दो बेटियां शामिल हैं । बेटा रशीद उल्लाह साहिब तो कैनेडा में रहता हैं और एक बेटी यहां लंदन में हैं और ज़हीर हयात साहिब की पत्नी हैं और दूसरी बेटी रिज़वाना हमीद कमाल यूसुफ़ साहिब की बहू, निसार अहमद साहिब की पत्नी हैं यह स्वीडन में हैं।

उनकी पत्नी वर्णन करती हैं कि हमारी शादी 1960 ई. में हुई। शादी के बाद मैंने देखा कि आपको जो भी अलाउंस मिलता था तो सबसे पहले इस में से चंदा निकालते और मुझे भी हमेशा ये आदेश करते कि पहले चंदे दो। बाद में अन्य अख़राजात पूरे करो और मुझे वसीयत करने का आदेश भी किया। शादी के वक़्त चौधरी साहिब की तनख़्वाह 80 रुपय थी। आजकल कोई तसव्वुर भी नहीं कर सकता, सस्ता ज़माना भी था लेकिन इसके बावजूद भी 80 रुपय बहुत मामूली रक़म थी। उनकी तनख़्वाह 80 रुपय थी इस पर मैं बहुत परेशान थी कि इस आय में चंदा निकालने के बाद गुज़ारा कैसे होगा लेकिन चंदे की बरकत से अल्लाह तआला का फ़ज़ल रहता और बड़े आराम से दिन गुज़रते। और मेरा ख़्याल है कॉलेज में क्योंकि लगे थे तो उस वक़्त कॉलेज के लोगों की जो तनख़्वाह, अलाउंस था वह ज़्यादा होता था। अन्य जो कारकुनान थे उनका, मुरब्बियान का या वाकफ़ीन ज़िंदगी का तो इस से भी कम होता था।

फिर लिखती हैं कि आप तहज्जुद गुज़ार थे। पाँच वक़्त की नमाज़ें बाजमाअत मस्जिद या दफ़्तर में अदा करते। बीमारी की सूरत में घर में अदा करते। नमाज़ का ख़ास एहतिमाम होता था। आख़िरी दम तक नमाज़ें पूरी और वक़्त पर पढ़ते। उन्हें देखकर मुझे भी नमाज़ तहज्जुद की आदत हो गई थी। मैंने सब कुछ उनसे सीखा है।

फिर कहती हैं कि मेरे साथ उनका बहुत ज़्यादा हुस्न-ए-सुलूक था। घर में जो भी वस्तु आती वह पहले मुझे देते और फिर बच्चों को तक़सीम करते। अधिकतर काम से देर से घर आते, बहुत रात गए तक दफ़्तर में रहते दफ़्तरों में काम करते थे। मैंने भी देखा है। तो कहती हैं कि मुझे तंग नहीं करते थे। बैरूनी दरवाज़े की चाबीयों से ख़ुद ही खोल के अंदर आ जाते। कितने भी लेट हों कभी घंटी नहीं बजाई। कभी नहीं उठाया और कहती हैं खाना यदि खाना होता तो जितनी उनकी ज़रूरत होती थी, जितना खाना चौधरी साहिब खाते थे वह मैं देगची में डाल के रख देती थी और रोटियाँ लपेट के पास रख देती थी और मैं सौ जाती थी। आप बाहर से आते थे ख़ुद ही खाना गर्म करके खा लेते थे। कभी कोई मुतालिबा नहीं किया चाहे खाने का हो या पहनने का। जो खाने के लिए मिलता ख़ुशी से खा लेते और जो कपड़ा लाती ख़ुशी से पहन लेते। कभी कोई एतराज़ नहीं किया। और यह घरों में अमन और सुकून रखने का बड़ा बुनियादी उसूल है। यदि इस पर अमल करें तो आधे घर क्या अस्सी फ़ीसद घरों के मसाइल कभी पैदा ही न हों। शुहदा, ओहदे दारान, प्रसिद्ध व्यक्तियों, कारकुनान, कारकुनान के परिजनों और अन्य जानने वाले अहबाब के जनाज़ों में ज़रूर शामिल होते थे और तदफ़ीन तक साथ रहते थे । किसी के बारे में दिल में ग़ुस्सा नहीं रखते थे। बहुत विनम्र स्वभाव था। एक शफ़ीक़ पति थे। बच्चों के लिए शफ़ीक़ बाप थे। किसी रिश्तेदार से नाराज़ नहीं होते थे। सुलह में पहल करते थे और कहते थे कि اَلْعِزَّةُ لِلّٰهِ جَمِيْعًا सब इज़्ज़तें अल्लाह तआला के लिए होती हैं। अपने बहन भाईयों और अन्य रिश्तेदारों का बहुत ख़्याल रखते थे। हर जुमेरात को रबवाह में मुक़ीम अपनी बहन के घर जाते। चौधरी साहिब ने वालदैन का भी बहुत ख़्याल रखा। कहती हैं मेरा ऑप्रेशन हुआ मैं रबवाह में दस दिन हस्पताल में रही। सोने के लिए वहां जगह कोई नहीं थी तो मेरे कमरे में फ़र्श पर ही लेट जाते थे। कभी शिकवा नहीं किया कि मैं नीचे नहीं सो सकता और बड़े शफ़ीक़ पति थे। कहती हैं जब मैं बीमार हो कर ताहिर हार्ट में दाख़िल होती तो वहां भी मेरे साथ रहते और हर लिहाज़ से ख़्याल रखते।

फिर उनकी बेटी यह कहती हैं कि कभी हमारी अम्मी से ऊंची आवाज़ में बात नहीं की। अबू केवल हमारे अबू नहीं थे बल्कि हमारे दोस्त भी थे। हम उन से हर बात शेयर कर सकते थे। फिर कहती हैं कि आम तौर पर छोटे होते मेरे कमरे में ही नमाज़ तहज्जुद पढ़ते थे। इस दौरान मुझे उनकी यह दुआ अब तक याद है जो वो बार-बार पढ़ते थे कि

हे क़ादिर-ओ-तवाना आफ़ात से बचाना

बचपन में सोने से पहले हमें कहानियां सुनाते। जब स्वीडन आते तो मेरे बच्चे छोटे थे उनको भी कहानियां सुनाते और हमारे अबू हमारे लिए दुआओं का ख़ज़ाना थे।

फिर उनकी एक बेटी कहती हैं कि उनकी सारी उमर यह रूटीन (routine) थी कि सुबह नाशते के बाद दफ़्तर जाते और दोपहर देर से घर आते। अस्र के बाद दुबारा दफ़्तर जाते और इशा के बाद देर से घर आते। बचपन में जब हमें कभी Maths में मदद की ज़रूरत होती तो उनके पास बच्चों को पढ़ाने का केवल फ़ज्र के बाद एक घंटा हुआ करता था।

एक दफ़ा जलसा सालाना के निरिक्षण की तक़रीब के दौरान हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस ने उनके बारे में फ़रमाया, उस वक़्त ख़लीफ़तुल मसीह सालिस कारकुनान के साथ खाना खाया करते थे तो जब बैठे हुए थे तो उस वक़्त हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस ने उनको कहा कि आप मेरे ही प्याले में मेरे साथ खाना खा लें। मिट्टी के पियालों में सालन दिया करते थे। तो जो पियाला हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस के सामने रखा उन्होंने चौधरी साहिब को कहा आप मेरे साथ इसी प्याले में खाएं।

आप हक़ीक़ी अर्थों में वक़्फ़ ज़िंदगी का हक़ अदा करने वाले थे। खाने पीने और सोने के अतिरिक्त आप ने केवल जमाअती काम किया कोई वक़्त ज़ाए नहीं किया। फिर यह बेटी कहती हैं कि जब मैं छोटी थी तो एक बात उन्होंने मुझे सिखाई कि ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है। मैं पहले हथेली खोल कर अर्थात हाथ फैला कर किसी से कुछ लेती थी तो कहते थे ऐसे नहीं लेना इशारे से समझाते थे कि ऊपर से पकड़ना है। ऐसे अंदाज़ में लेना चाहिए ख़ाह पैसे हों या कुछ और हो। यह भी तर्बीयत का एक अच्छा तरीक़ा है। दुनियावी चीज़ों से उनको बिल्कुल मुहब्बत नहीं थी। कहती हैं मैंने कभी किसी और व्यक्ति में यह ख़ूबी नहीं देखी। कोई जितना भी बड़ा तोहफ़ा उनको दे देता उनकी आँखों में कोई चमक न होती थी। उनकी आँखों की चमक और दिलचस्पी सिर्फ़ जमाअती कामों में होती थी। फ़ोन बैड के पास रखा होता था। चौबीस घंटे वह हर एक को फ़ोन पर available होते थे।

फिर उनकी बड़ी बेटी लिखती हैं कि अपने बच्चों पर उनकी गहिरी नज़र होती थी। उनके जज़बात और एहसासात का बहुत ख़्याल रखते थे। कभी हम पर अपनी ज़ात से सम्बन्ध में कोई बोझ नहीं डाला अर्थात यह नहीं कहा कि यह कर दो वो कर दो। अपने काम ख़ुद ही कर लिया करते थे। हर वक़त हमारी मदद करने की कोशिश करते। मेरे बच्चों को भी पास बिठा कर सिलसिला की बातें सुनाते। वक़्फ़ की बरकात और खलीफ़ा के साथ अपनी ईमान बढ़ाने वाली घटनाएँ सुनाते। उनकी हर बात बा-मक़सद होती और इस का हम पर एक अच्छा प्रभाव होता।

उनके बेटे ने भी यही लिखा है कि आप हमेशा दो बातों पर-ज़ोर देते थे कि नमाज़ें और ख़लीफ़ा वक़्त का ख़ुतबा किसी सूरत में miss नहीं करना चाहिए और ख़लीफ़ा वक़्त ने जो भी इरशाद फ़रमाए हैं उन पर भरपूर अमल करना चाहिए। फिर यह कहते हैं कि मुझे यह कहा करते थे तब्लीग़ का माध्यम यदि कोई पैदा करना है तो कैनेडीयनज़ (Canadians) पर यह प्रभाव डालो कि उनको यह एहसास हो कि यह व्यक्ति हमारी इज़्ज़त भी करता है और हमसे मुहब्बत भी करता है।

जमीलुर्रहमान रफ़ीक़ साहिब वकील तसनीफ़ तहरीजके जदीद लिखते हैं कि चौधरी साहिब से एक महान सम्बन्ध था। चौधरी साहिब के पिता साहिब मुहम्मद बख़श साहिब बड़े दीन-दार आदमी थे, नेक ख़सलत थे। यही विशेषताएँ चौधरी साहिब में भी थीं और प्रवान चढ़ीं। उनके पिता मुहम्मद बख़श साहिब चौधरी फ़ज़ल अहमद साहिब को तब्लीग़ किया करते थे। यह साठ, सत्तर वर्ष पहले की बात है और उनके पिता के कारण से चौधरी फ़ज़ल अहमद साहिब ने अहमदियत क़बूल कर ली और फिर जमीलुर्रहमान साहिब का जो मज़ीद सम्बन्ध बना तो कहते हैं कि वह इस कारण से था कि चौधरी फ़ज़ल अहमद साहिब फिर ख़ाकसार के ससुर बने और इस सम्बन्ध को फिर उन्होंने ख़ूब निभाया। इसके अतिरिक्त कहते हैं ख़ाकसार के उस्ताद भी थे। जब ख़ाकसार बी. एस. सी. में थे तो उस वक़्त mathematics में एम.ए. कर के यह आए थे। कुछ अरसा उन्होंने हमें पढ़ाया। बड़ी दिलजमई से पढ़ाया करते थे जिस से हम लोग बड़े प्रभावित होते थे। उसूल के बड़े पक्के थे लेकिन शफ़क़त करने वाले थे और सहायता करने वाले कारकुनान की दरपर्दा इमदाद किया करते थे। ख़ुदा के फ़ज़ल से मेहनती बहुत थे। तबीयत इलमी थी। खासतौर पर तारीख़ और जुग़राफ़िया से ख़ूब वाक़िफ़ थे और इसका आदेश भी दिया करते थे। ख़ुदा के फ़ज़ल से जमाअती अम्वाल निहायत एहतियात से ख़र्च किया करते थे और फ़रमाया करते थे कि कुछ शब्दों की एक चिट्ठी के लिए पूरे साइज़ के बजाय आधा काग़ज़ इस्तिमाल किया करें। हर मुआमले की अन्दर तक पहुंचते। कोई मुआमला दरपेश होता तो उसके तमाम पहलूओं तक का जायज़ा लेते और फिर कोई निर्णय करते। यह ख़ूबी ख़ुदा के फ़ज़ल से उनमें बहुत विशेष थी।

लईक नासिर साहिब वकीलुद्दीवान कहते हैं कि चौधरी साहिब ने मुझे वर्णन किया कि ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह तआला जब सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया थे तो चौधरी साहिब की बतौर मुआविन इजतिमा पर डयूटी थी। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह तआला ने आपको कहा ज़रा लंगर ख़ाना का सूरत-ए-हाल देखकर आएं। (लंगर इजतिमा पर भी चला करता था) देख कर आओ खाना किस तरह पक रहा है। चौधरी साहिब कहते हैं कि मैं चलने लगा तो हज़रत साहिब ने वापस बुला लिया कि लंगर के जो इंचार्ज हैं वह तो बहुत सख़्त तबीयत का हैं। वह तो तुम्हें अंदर नहीं घुसने देंगे। तुम बग़ैर किसी अथार्टी के जा रहे हो और बड़ी उमर के भी हैं। तो कहते हैं में उनका मुआविन था हज़रत साहिब ने अपना सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया का बैच उतार कर मुझे लगा दिया कि अब यह अथार्टी तुम्हारे पास है कि सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया ने भेजा है और यह अपना बैच लगा कर भेजा है और फिर जाओ और जा के रिपोर्ट लेकर आओ।

जब मैंने समस्त नाज़िरान, वुकला को एक दफ़ा यह कहा था, बाद में भी दो तीन दफ़ा कहा है, कि बाहर जमाअतों में जाएं और लोगों को मिलें और मेरा सलाम पहुंचाएं तो चौधरी साहिब भी दौ दफ़ा गए। लिखने वाले कहते हैं कि दौ दफ़ा में उनके साथ दौरे पर सरगोधा गया। ज़िला सरगोधा उनके सपुर्द था और कोई घर उन्होंने नहीं छोड़ा, हर घर तक पहुंचे और जो व्यक्ति घर में नहीं मिलता था, पता लगता था कि वह डेरे पर है या कहीं काम पर गया हुआ है तो आप वहीं चले जाते और मुलाक़ात करते। कुछ ऐसी जगहें भी थीं जहां गाड़ी नहीं जा सकती थी तो बेशुमार दफ़ा कई कई किलो मीटर पैदल चल कर उन लोगों तक सलाम पहुंचाने के लिए पहुंचे। फिर यह भी ख़ास आदत थी उनकी कि इताअत और तामील पूरी करनी है। जो पैग़ाम मैंने दिया हुआ था वह कई दफ़ा पढ़ते थे और कहते यह भी मुझे हिदायत थी कि जब पैग़ाम मैं देने लगूँ लोगों को तो यदि कहीं ग़लती से शब्द आगे पीछे कर दूं तो मुझे टोक दिया करो और बता दिया करो कि यह शब्द इस तरह हैं। इस हद तक वह particular थे। फिर यह कहा करते थे कि दफ़्तरी मुआमलात में भी उनकी एक मुस्तक़िल हिदायत थी कि जो भी मुआमला हो छोटा हो या बड़ा हो, ग़लती भी हो गई हो तो ख़लीफ़तुल मसीह को बाख़बर रखना है और लाज़िमी तौर पर बात उनके इलम में लाएंगे। इस से दुआ भी हो जाती है और इस्लाह भी हो जाती है। सादगी इंतिहा की थी दौरे के दौरान भी जमाअत को हिदायत थी कि कोई प्रोटोकोल न हो। जब खाने का वक़्त हुआ जहां अवसर मिला खा लिया। कई दफ़ा गाड़ी में बैठ के खाना खा लिया। कई दफ़ा गांव में फिरते हुए फ़सल में कहीं किनारे पर बैठ के खाना खा लिया। फिर कई दफ़ा इस दौरे के दौरान कुछ जमाअतें कहतीं कि आज हमारे से कोई ख़िताब कर दें तो इंकार कर दिया करते थे कि जिस बात का मुझे आदेश मिला है फ़िलहाल में केवल वही करूँगा।

हज़रत मुसल्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु यह इरशाद था क़ादियान वालों को भी, रबवाह वालों को भी कि अपने मुहल्ले की मस्जिदों में नमाज़ अदा किया करें। आख़िर वक़्त तक इस पर भी कारबन्द रहने की कोशिश करते रहे। यदि मस्जिद मुबारक में, मर्कज़ी मस्जिद में आते भी थे तो कम अज़ कम कोई न कोई नमाज़ ज़रूर (मुहल्ले की मस्जिद में) अदा करते थे। रात को भी दफ़्तर आते थे। कई दफ़ा ऐसा भी हुआ कि आप शाम को दफ़्तर आए और कोई दफ़्तर खोलने वाला नहीं होता था तो आप ख़ुद आकर दफ़्तर खोलते और काम करते रहते। यह आदत आपको कॉलेज के दौर से ही थी। एक दिलचस्प घटना कॉलेज के दौर का है लिखते हैं कि एक दफ़ा आप तालीमुल इस्लमा कॉलेज के स्टाफ़ रुम में शाम के वक़्त बैठे काम कर रहे थे तो मददगार आया और डिब्बा दिया जिसमें खाने की वस्तु थी। खोला तो इस में बिरयानी थी या पुलाव था। उन्होंने कहा यह प्रिंसिपल साहिब ने भिजवाया है। उस वक़्त हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस, हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमद साहिब प्रिंसिपल थे। उन्हें मालूम नहीं था कि आप वहां बैठे हुए हैं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने बाद में उनको फ़रमाया कि मुझे पता था कि आप इस वक़्त बैठे होंगे, इसलिए मददगार को कहा कि जाओ वहां जो कोई भी बैठा हो उसको दे आओ ।

जब भी आप के घर कोई जाता ख़ुद मेहमान-नवाज़ी करते। अपने कारकुनों को अपने अधीनों को बग़ैर तकल्लुफ़ के जो कुछ होता पेश कर देते। लईक आबिद साहिब ने लिखा कि छोटे छोटे मुआमलात में बहुत ज़्यादा एहतियात से काम किया करते थे। कोई भी ड्राफ़्ट, बिल या ख़त मुकम्मल पढ़े बग़ैर साइन नहीं किया करते थे और व्य बड़ी ज़रूरी चीज़ है अफ़िसरों के लिए कि बग़ैर देखे साइन न किया करें। वक़्त की पाबंदी करते और हर काम वक़्त पर करने की आदत इस क़दर पक्की थी कि मानों वक़्त पर सवार हों और जिस तरफ़ चाहें उस को मोड़ लें। इस क़दर वक़्त की पाबंदी के बावजूद अदब के तक़ाज़ों का बहुत लिहाज़ करने वाले थे। मस्जिद में नमाज़ के लिए जाते तो खुदा की इबादत में व्यस्त हो जाते और घड़ी की तरफ़ नहीं देखते थे जैसा कि उमूमन लोगों का तरीक़ होता है कि नमाज़ का वक़्त हो गया है तो नमाज़ शुरू क्यों नहीं हुई, घड़ियाँ देखने लग जाते हैं। जब भी इमाम आया उस वक़्त नमाज़ पढ़ ली। बाहर से आने वाले जो मुबल्लग़ीन थे उनको नसाएह करते। उमूमन ये नसाएह किया करते थे कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुतुब पढ़ें और हज़रत मसीह मौऊद की कुतुब में वर्णन होने वाली शिक्षाओं पर अमल करें, इसी तरह हम सारी दुनिया में अहमदियत की एक जैसी शक्ल बना सकते हैं।

समीउल्लाह स्याल साहिब कहते हैं हमने इकट्ठे मैट्रिक की। शिक्षा मुकम्मल करने के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में पेश हुए, वक़्फ़ की दरख़ास्त की और हुज़ूर ने वक़्फ़ क़बूल फ़रमाया। आख़िर वक़्त तक तक़रीबन इकहत्तर वर्ष तक मुख़्तलिफ़ हैसियतों से ख़ाकसार उनके साथ रहा। अपने औसाफ़ के लिहाज़ से वह एक महान इन्सान थे। एक हमदरद, बाहिम्मत, हर समय दीन की ख़िदमत करने वाले और ख़िलाफ़त से बेपनाह इशक़ रखने वाले वजूद थे। यह भी उनकी विशेषयत थी कि नए आने वाले वाकफ़ीन की निहायत उम्दगी से तर्बीयत किया करते थे (और ये बहुत बड़ी ख़ूबी थी) इसलिए मैंने भी कुछ वाकफ़ीन को उनके सपुर्द किया कि उनकी तर्बीयत करें और उन्होंने बड़ी अच्छी तरह उनकी तर्बीयत की।

हलीम क़ुरैशी साहिब कहते हैं कि इंतिज़ामी मुआमलात और माली मुआमलात पर बड़ी सख़्त गिरिफ़्त थी। कभी बद इंतिज़ामी बर्दाश्त न करते। माली मुआमलात पर गहिरी नज़र रखते और क़ीमतों के बारे में अपडेट लेते रहते। यदि कोई बिल आता और इस में दस रुपय भी ज़ाइद होते तो पूछताछ करते कि अमुक दुकान पर इस वस्तु की क़ीमत सौ रुपय है और आपने एक सौ दस रुपय ख़र्च किए हैं।

अमीर मुहम्मद केसरानी साहिब इंजीनियर हैं रोटी प्लांट जलसा सालाना में। कहते हैं कि चौधरी साहिब मश्वरे को बेहद एहमीयत देते थे। कोई भी निर्णय करने से क़बल सम्बंधित ओहदेदार या उस काम के expert से मश्वरा ज़रूर करते थे। हर नया क़दम उठाने से पहले उस का तफ़सीली जायज़ा लेते थे और वसीअ पैमाने पर मश्वरा करने के बाद ही किसी नतीजा पर पहुंचते थे। जुमे को जब उमूमन दफ़ातिर बंद होते हैं तो उस वक़्त रोटी प्लांट के ट्रायल किया करते थे। इसी तरह आख़िरी हफ़्ता में छुट्टी पर भी अधिकतर दफ़्तर जाया करते थे। इस बारे में अपने साथ काम करने वालों को समझाते थे कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस से हमने यह सीखा है कि जब कभी भी ज़ाती ज़िंदगी में किसी किस्म की परेशानी या मुश्किल हो तो जमाअती कामों में ज़्यादा वक़्त दिया करो। अल्लाह तआला ख़ुद ही वह परेशानी दूर कर देगा। राह चलते लोगों से बहुत इज़्ज़त और प्यार से मिलते।

हर व्यक्ति से इस की दिलचस्पी के विषय पर बात करते। इंजीनियर साहिब कहते हैं कि वफ़ात से क़बल एक मीटिंग में तामीराती काम में कुछ देरी होने पर ख़ाकसार और अन्य इंजीनीयर्ज़ से कुछ नाराज़गी का इज़हार किया जबकि उसी दिन छुट्टी के बाद ख़ाकसार को फ़ोन किया और हमेशा की तरह मुस्कुराते हुए बोले कि आज मैंने शायद कुछ सख़्त शब्द इस्तिमाल कर लिए थे उसकी क्षमा मांगने के लिए फ़ोन किया है और ख़ाकसार का हाल भी दरयाफ़त किया।

हाफ़िज़ मुज़फ़्फ़र अहमद साहिब लिखते हैं कि ख़ाकसार की दरख़ास्त पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे ने रिसर्च सेल की तामीर की उसूली मंज़ूरी अता फ़रमाई। चौधरी साहिब से मिलने की हिदायत अता फ़रमाई और उस वक़्त उन्हों ने तामील-ए-इरशाद में दो चुने हुए स्थनों में से जामिआ में यह दफ़्तर बनवा कर के दिया। दौरान मुशावरत फ़रमाया कि आप लोगों ने आगे भी जमाअती काम करने हैं। एक तो हमेशा सिलसिला की आइन्दा ज़रूरीयात मद नज़र रखनी चाहिऐं। दूसरे क़नाअत और किफ़ायत का उसूल भी पेश-ए-नज़र रखना चाहिए और शौक़िया बड़े ऑफ़िस टेबल या आरामदेह कुर्सी के बजाय हस्ब-ए-ज़रूरत मुनासिब फ़र्नीचर तैयार करवाने पर तवज्जा दिलाई।

माजिद ताहिर साहिब वकीलुत बशीर् लंदन लिखते हैं कि आपके वक़्त का हर लम्हा ख़िदमत दीन में गुज़रा। मुख़्तलिफ़ दफ़्तरी मुआमलात की कार्रवाई में जो भी ख़लीफ़ा वक़्त की तरफ़ से इर्शादात होते चौधरी साहिब को पहुंचाए जाते तो फ़ौरी तौर पर बिना देरी किए उन पर कार्रवाई फ़रमाते। कई दफ़ा रात के वक़्त इरशाद मिलता और चौधरी साहिब इस इरशाद की तामील के लिए दफ़्तर आ जाते और फिर तामील करके घर जाते। निसंदेह आप का उठना, बैठना, खड़े होना, चलना, बोलना और ख़ामोश रहना ख़लीफ़ा वक़्त के अधीन था। जो लोग क़वायद को ख़लीफ़ा वक़्त के कहने से भी ज़्यादा ऊपर समझते हैं और लिखते हैं जी जमाअत के क़वायद लिखे गए उन्ही पर अमल होना चाहिए, उनको हमेशा यह कहा करते थे कि जो ख़लीफ़ा वक़्त हिदायात देते हैं और जो इर्शादात फ़रमाते हैं उन पर अमल करें यही आपके लिए क़वायद हैं। और वैसे भी क़वायद में एक ओवर रोलिंग क्लॉज़ (over ruling clause) यह उपस्थित है।

मुबश्शिर अय्याज़ साहिब प्रिंसिपल जामिआ रबवाह लिखते हैं कि जमाअती रवायात और तारीख़ का एक इन्साईक्लो पीडीया थे। और यह बिल्कुल सही है। जितना भी अवसर मिला एक वस्तु जो महसूस हुई वह उनका मज़बूत ज्ञान और विवेक था जो उनके सम्बंधित कामों में होता था। कहते हैं मैं अपने कुछ साथीयों को कहा करता हूँ कि चौधरी साहिब जामिआ के हवाले से मीटिंग करें तो वह हमें यह भी बता देंगे कि तुम्हारे जामिआ में इतनी सीढ़ीयां हैं, इतने पौधे हैं और अमुक अमुक जगह पर यह कमी है या यह पौधा लगा हुआ है। बड़ी गहराई से हर वस्तु को देखा करते थे। वह जिस मुआमले पर मीटिंग ले रहे होते थे उस की तमाम-तर तफ़सीलात को उसकी जानते थे और अपने साथीयों से भी ऐसी ही आशा रखते थे। फिर लिखते हैं कि रबवाह की सारी तारीख़ तो मानों उनकी आँखों और दिल, ज़हन पर नक़्श थी। कुछ महीने पूर्व मुझे चौधरी साहिब से मुलाक़ात का अवसर मिला। मैंने अर्ज़ किया कि रबवाह के कुछ तारीख़ी स्थानों के बारे में कुछ पुराने बुज़ुर्गों की बताई हुई बातों में कभी मतभेद सामने आता है आप उसकी निशानदेही करवा दें जिस पर उन्होंने कई बातें ख़ाकसार को बताईं और तफ़सील से बताया कि अमुक अमुक व्यक्ति बता सकता है लेकिन अब अमुक की याददाश्त में कुछ कमज़ोरी है, ऐसा करो कि फ़हरिस्त बना कर मुझे भेज दो फिर तुम्हारे साथ जा कर जितना मुझे याद होगा बता दूँगा। कहते हैं उनकी विनम्रता और सादगी का यह आलम था कि ख़ुद चाय बना कर हमेशा मुझे दिया करते थे। विनम्रता की एक और घटना कहते हैं कि कुछ पहले क़ादियान जलसा पर गए वहां लंगर ख़ाने के नायब निगरान महफ़ुज़ुर्रहमन साहिब थे। हम खड़े बातें कर रहे थे तो चौधरी साहिब का वहां से गुज़र हुआ। अस्स्लामोअलेकुम हुई। कहते हैं उसके बाद महफ़ूज़ साहिब एक बड़ी ख़ास कलबी कैफ़ीयत में मुझे बताने लगे कि चौधरी साहिब अजीब सादा-मिज़ाज आदमी हैं। कहते हैं अभी थोड़ी देर पहले मेरे पास आए कि महफ़ूज़ साहिब कुछ खाना है? जल्दी से खाना लगा दें मैं एक मीटिंग से आया हूँ और कोई पंद्रह बीस मिनट तक दुबारा एक मीटिंग में जाना है। कहते हैं खाने का वक़्त ख़त्म हो चुका था। मैंने कहा अच्छा फ्रिज में पड़ा हुआ खाना है वह मैं गर्म कर के लाता हूँ तो आप इतनी देर में जा कर तैयार हो कर आ जाएं। फ्रेश हो के आ जाएं। तो ख़ैर कहते हैं मैं खाना गर्म करने लगा। खाना गर्म करके जब मैं ले के आया तो वक़्त काफ़ी हो गया था। देखा कि चौधरी साहिब क्योंकि वक़्त के पाबंद थे, वक़्त पर मीटिंग पर जाना था और लग रहा था कि आप खाना खाएँगे तो लेट हो जाऐंगे तो इस से पहले ही उनको देखा कि डाइनिंग टेबल पर जो रोटी के बच्चे कुचे टुकड़े थे वे इकट्ठे करके और बची हुई दाल या जो भी था उसके साथ खाना तक़रीबन ख़त्म कर चुके थे और पूरे वक़्त पर मीटिंग के लिए चले गए और चेहरे पर किसी किस्म की नाराज़गी के कोई आसार नहीं थे कि तुम बड़ा लेट खाना क्यों लाए हो? क्या कारण है? वही रोटी के टुकड़े खा लिए और दाल जो बची हुई थी वह खा ली या जो भी डिश में या प्लेटों में था और चले गए।

चौधरी साहिब का हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुतुब का मुतआला भी बड़ा वसीअ था। इस प्रकार लगता था कि मुस्तक़िल तौर पर इन कुतुब को अपने ज़ेर मुतआला रखते हैं और केवल मुतआला की हद तक नहीं बल्कि यदि यह कहा जाए कि हिसाबी तौर पर एक ख़ास नज़र थी इस नज़र से भी किताबों को देखते थे तो ग़लत नहीं होगा। एक एक बात का नरीक्षण किया होता था और जो जो सवाल इस पर होते थे उनको हल किया होता था या हल करने की कोशिश की होती थी और यह नसीहत दूसरों को भी करते थे कि जब भी पुस्तक पढ़ो तो एक एक फ़िक़रे पर नज़र रखों और जहां कोई सवाल पैदा हो उसको हल करने की कोशिश करो।

मुबारक सिद्दीक़ी साहिब कहते हैं कि एक बार जब लंदन तशरीफ़ लाए तो मैं (हुज़ूर) ने उनको इजाज़त दी कि टी.आई. कॉलेज ओलड स्टूडैंटस वालों के साथ मीटिंग कर लें, एक नशिस्त रख लें। कहते हैं मैंने जा के चौधरी साहिब को अर्ज़ किया कि इस प्रकार ख़लीफ़तुल मसीह ने कहा है। ख़ैर वह आए तो मैंने वहां उनसे कहा कि अल्लाह तआला ने आपको बड़ा लंबा अरसा ख़िदमात की तौफ़ीक़ दी है। बड़े सम्मानात से नवाज़ा है, हमें इस का राज़ बताएं, कोई नसीहत फ़रमाएं। इस पर उन्होंने कहा कि एक ही राज़ है और वह यह है कि अपने इलम और अपनी अक़ल को कुछ न समझें और आँखें बंद करके ख़लीफ़ा वक़्त की इताअत करें। ऐसी इताअत हो कि आपका दिल गवाही दे कि मैंने इताअत का हक़ अदा करने की भरपूर कोशिश की है।

मिर्ज़ा जव्वाद साहिब लिखते हैं कि ख़लीफ़तुल मसीह सालिस की एक रिवायत सुनाते थे कि एक दफ़ा ख़लीफ़तुल मसीह सालिस ने चौधरी साहिब को बताया कि पार्टीशन से पूर्व जलसा के अवसर पर जो बाक़ायदा एक हफ़्ता की डयूटीज़ लगती थीं इस पूरे अरसा में समस्त डयूटी देने वालों को केवल एक-बार एक चाय की प्याली बतौर रीफ़रेशमंट मिलती थी। इसलिए एक ख़ादिम कारकुन ख़ुशी ख़ुशी चाय लेकर अपनी रिहायश गाह पर आया। (अन्य तो खाना जो लंगर में पकता था वही होता था। चाय केवल एक दफ़ा कारकुन को मिल रही है।) तो एक कारकुन चाय लेकर अपनी रिहायश गाह में आया तो साथ बिस्तर में उपस्थित मेहमान ने समझा कि शायद मेरे लिए चाय ले के आया है। कारकुन जब अंदर कमरे में दाख़िल हुआ वहां मेहमान लेटा हुआ था मेहमान ने ख़ादिम से सवाल के रंग में पूछ लिया कि क्या

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

मेरे लिए चाय लाए हो? तो ख़ादिम ने बग़ैर कोई एहसास दिलाए वह चाय मेहमान को दे दी और चौधरी साहिब कहते थे कि हज़रत ख़लीफ़ा सालिस यह घटना वर्णन करके डयूटी देने वालों की इस क़ुरबानी का वर्णन फ़रमाते थे कि कैसे डयूटी वाले हर हालत में क़ुर्बानी करके मेहमानों का ख़्याल रखते थे। चौधरी साहिब कहते कि देखो एक वह दौर था कि हफ़्ते भर की डयूटी में यह एक रीफ़रेशमंट होती थी कि चाय का कप मिलेगा और वो भी डयूटी के दौरान क़ुर्बान करना पड़ता था और एक आज का दौर है कि ख़ुदा तआला ने जमाअत को माली लिहाज़ से इस क़दर नवाज़ा है कि हर छोटी मीटिंग में भी चाय पेश होना एक आम सी बात हो गई है इसलिए ख़ुदा के इन फ़ज़लों का इदराक होना चाहिए और हमेशा जमाअती अम्वाल को एहतियात के साथ फ़ुज़ूलखर्ची से बचते हुए ख़र्च करना चाहिए।

बहरहाल बातें तो बेशुमार और भी हैं यह कुछ एक मैं ने ली थीं। और तो लंबा हो जाएगा। यहीं मैं ख़त्म करता हूँ और जो भी बातें वर्णन हुई हैं उनके बारे में जो विशेषताएं वर्णन हुई हैं उनमें कोई बढ़ोतरी नहीं है। बेशुमार बातें जो लोगों ने लिखी हैं कुछ इतनी ज़्यादा थीं कि मैं बीच में से ले भी नहीं जा सकीं और बल्कि बाज़ों को पढ़ भी नहीं सका। ग़ैरमामूली सलाहीयतें रखने वाली शख़्सियत थे। दरवेश सिफ़त थे और अत्यधिक मेहनत करने वाले थे। उनके साथ मैंने भी काम किया है और बड़े नरम अंदाज़ में यह काम सिखाया भी करते थे। फिर जब नाज़िरे आला बना हूँ तो उस वक़्त भी या स्थानीय अमीर तो उस वक़्त बिल्कुल उनका और रवैय्या हो गया। निहायत इताअत के साथ उन्होंने वह वक़्त भी गुज़ारा और ख़िलाफ़त के साथ तो फिर अत्यधिक वफ़ादारी के साथ एक अहमदी की हैसियत से एक कारकुन की हैसियत से बैअत का हक़ अदा करने वाले की हैसियत से अपने समस्त हक़ अदा किया। ख़लीफ़ा वक़्त की हर आवाज़ को और हर आदेश को बड़ी संजीदगी से लिया और लफ़्ज़न नहीं बल्कि हर्फ़न हर्फ़न इस पर अमल किया। कभी कोई तावीलें नहीं की कि इस की यह तावील होती है या यह तावील होती है।

जामिया जूनीयर सैक्शन एक ज़माने में अलैहदा एक इमारत थी। मैं ने उनको कहा कि मेरा ख़्याल है कि ज़ायद ख़र्च है, ज़रूरत भी नहीं है इसको अब बड़े जामिआ में, सीनीयर सैक्शन में जोड़ दिया जाए तो उस वक़्त उनकी कुछ reservations थीं, कुछ और बुज़ुर्गों की भी थीं। मैंने राय मांगी थी तो उन्होंने अपनी राय दी कि नहीं होना चाहिए लेकिन बाद में जब मैं ने निर्णय कर दिया तो बग़ैर किसी बात के के तुरन्त उसी वक़्त अमल करवा के, मेरा ख़्याल था कि कुछ दिन लगेंगे, चौबीस घंटे के अंदर अंदर इस पर अमल करवा के मुझे रिपोर्ट भी दे दी कि यह सब कुछ हो गया है।

अल्लाह तआला उनके दर्जात बुलंद फ़रमाए और ख़िलाफ़त को इन जैसे सुलतान नसीर मिलते रहीं।

हालात के सम्बन्ध में भी दुआ करते रहें। पाकिस्तान के हालात अल्लाह तआला जलद बदले और वहां अहमदियों को आज़ादी से अपनी ज़िंदगीयां गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता हो।

दूसरी अहम बात यह भी मैं कहना चाहता हूँ कि दुनिया में कोरोना की जो महामारी फैली हुई है इस में अहमदी भी एहतियात का जो हक़ है वह नहीं अदा कर रहे। न यू.के. में न अमरीका में न पाकिस्तान में न किसी और देश में। पूरी तरह एहतियात करनी चाहिए। मास्क इत्यादी पहनना चाहिए। मास्क पहना होता है तो नाक नंगी होता है हालाँकि नाक ढका होना चाहिए। या गर्दन के ऊपर मास्क रखा होता है तो इस प्रकार मास्क पहनने का फ़ायदा क्या? फिर आपस में क़रीब हो के मिलना, सोशल डिस्टेंसिंग (social distancing) नहीं रखते और जो क़वाइद गर्वनमैंट ने निर्धारति किए हुए हैं हुकूमत ने बातें बताए हुए हैं उन पर अमल नहीं करते। तो इन सारी बातों पर हमें अमल करना चाहिए। नहीं तो यह महामारी इसी तरह फिर एक दूसरे से फैलती चली जाएगी। और यह भी कोशिश करनी चाहिए कि आजकल कम से कम यात्रा करें। बिना कारण ग़ैर ज़रूरी यात्रा को avoid करें। यूरोप से पाकिस्तान जाने वाले भी एहतियात करें, आजकल न ही जाएं तो ज़्यादा बेहतर है। बहरहाल अल्लाह तआला इस महामारी को जल्द दूर करे और जो अहमदी बीमार हैं उनको भी और जो अहमदी नहीं हैं दूसरे लोग भी जो बीमार हैं उनको भी शिफ़ा अता फ़रमाए।

नमाज़ों के बाद में इन्शा अल्लाह चौधरी साहिब का जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा।

☆ ☆ ☆ ☆
☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

रखती और तर्बीयत करती है और यह महान चमत्कार है। हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का। दूसरी शिक्षाएं ऐसी नहीं। किसी का नाक नहीं तो किसी के कान नहीं हैं। अत: वह त्रुटिपूर्ण और अधूरी हैं। सम्पूर्ण रचना इस्लामी शिक्षा ही की है। तौहीद,तआला तआला के गुण, नबुव्वत और उच्च आचरण, नफ़्स की सम्पूर्णता इत्यादि ज़रूरी मामले जिनका इन्सान मुहताज है वे ऐसे परिपूर्ण और रोशन रूप से बयान हुए हैं कि उनमें ज़्यादा बेहस की ज़रूरत नहीं पड़ती। बाक़ी मालों कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कैसे खाते थे? कितने बड़े निवाले लेते थे। इन झगड़ों में पड़ने की मोमिन को क्या ज़रूरत है? मोक्ष का आधार इन बातों पर नहीं है। ऐसी बातें जो असर(हदीस की एक किस्म) के तौर पर लिखी गई हैं। यदि वह सच्ची नबुव्वत के विरुद्ध नहीं बल्कि सदृश्य हैं तो ईमान लाऐं वर्ना तावील करें। कुछ ज़रूरत नहीं कि इस पर आधार रख कर लंबी और फ़ुज़ूल बहसों में पढ़ें।

ख़ातमन्नबिय्यीन के अर्थ

ख़त्म नबुव्वत के बारे में में फिर कहना चाहता हूँ कि ख़ातमन्नबिय्यीन के बड़े अर्थ यही हैं कि नबुव्वत के मामलों को आदम अलैहिस्सलाम ले कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ख़त्म किया। यह तो मोटे और ज़ाहिर अर्थ हैं। दूसरे यह अर्थ हैं कि कमालात नबुव्वत का दायरा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ख़त्म हो गया। यह सच और बिलकुल सच है कि क़ुरआन ने अपूर्ण बातों का कमाल किया और नबुव्वत ख़त्म हो गई, इसलिए اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ (अलमायद :4) का मिस्दाक़ इस्लाम हो गया। अत: यह नबुव्वत के निशान हैं। उनकी कैफियत और भेद पर बेहस करने की कोई ज़रूरत नहीं। उसूल साफ़ और रोशन हैं और वह प्रमाणित सच्चाइयां कहलाती हैं। इन बातों में पड़ना मोमिन को ज़रूरी नहीं। ईमान लाना ज़रूरी है। यदि कोई विरोधी आरोप करते तो हम इस को रोक सकते हैं। यदि वह बंद न हो तो हम इस को कह सकते हैं कि पहले अपने आन्तरिक मस्लों का प्रमाण दे। अत: मुहर नबुव्वत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नबुव्वत के निशानों में से एक निशान है ,जिस पर ईमान लाना हर मुसलमान मोमिन को ज़रूरी है।

5 जनवरी 1899 ई

क़ब्र से रूह का सम्बन्ध

(सवाल मौलवी क़ुतुबुद्दीन साहिब)"रूह का जो सम्बन्ध क़बरों से बताया गया है। इस की वास्तविकता क्या है?'

फ़रमाया: "असल बात यह है कि जो कुछ रूहूं के सम्बन्ध क़ुबरों के बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हादीसों में आया है वह बिलकुल सच और ठीक है। हाँ यह दूसरी बात है कि इस सम्बन्ध की कैफ़ीयत और भेद क्या है? जिसके मालूम करने की हमको ज़रूरत नहीं;अलबत्ता यह हमारा कर्तव्य हो सकता है कि हम यह प्रमाणित कर दें कि इस किस्म का सम्बन्ध क़ुबरों के साथ रूहों का होता है और इस में कोई बुद्धि के विपरीत कोई बात नज़र नहीं आती।

और इसके लिए हम अल्लाह तआला के क़ानूने क़ुदरत में एक उदाहरण पाते हैं। वास्तव में यह बात इसी किस्म की है जैसे हम देखते हैं कि कई मामलों की सच्चाई और हक़ीक़त केवल ज़बान ही से मालूम होती है और इस को ज़रा व्यापक करके हम यूं कहते हैं कि चीज़ों की वास्तविकता के मालूम करने के लिए अल्लाह तआला ने विभिन्न तरीक़े रखे हैं। कई गुण आँख के द्वारा मालूम होते हैं और कई सच्चाइयों का पता सिर्फ़ कान लगाता है और कई ऐसी हैं कि कर्म इन्द्रियों से उनका सुराग़ पता चलता है और कितनी ही सच्चाईयां हैं कि वह शक्ति के केन्द्र अर्थात दिल से पता चलती हैं। अत: अल्लाह तआला ने सच्चाई के मालूम करने के लिए विभिन्न तरीक़े और माध्यम रखे हैं। जैसे मिसरी की एक डली को यदि कान पर रखें तो वह उसका मज़ा मालूम न कर सकेंगे और न उसके रंग को बतला सकेंगे। ऐसा ही यदि आँख के सामने करेंगे तो वह उसके ज़ायक़ा के बारे में कुछ न कह सकेगी। इससे साफ़ तौर पर मालूम होता है कि चीज़ों की वास्तविकता मालूम करने के लिए विभिन्न शक्तियां और ताक़तें हैं। अब आँख के बारे में यदि किसी चीज़ का ज़ायक़ा मालूम करना हो और वो आँख के सामने पेश हो तो क्या हम यह कहेंगे कि इस चीज़ में कोई ज़ायक़ा ही नहीं या आवाज़ निकलती हो और कान बंद करके ज़बान से वह काम लेना चाहें तो कब संभव है। आजकल के फ़लसफ़ी मिज़ाज लोगों को यह बड़ा धोखा लगा हुआ है कि वे

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 18-25 March 2021 Issue No.11

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

अपने ज्ञान न होने के कारण से किसी सच्चाई का इनकार कर बैठते हैं। दैनिक के कामों में देखा जाता है कि सब काम एक व्यक्ति नहीं करता बल्कि अलग अलग सेवाएं निर्धारित हैं। सक्क़ा पानी लाता है। धोबी कपड़े साफ़ करता है बावर्ची खाना पकाता है। अत: मेहनत की तक़सीम का सिलसिला हम इन्सान के ख़ुद बनाई गए प्रणाली में भी पाते हैं। अत: इस मूल को याद रखो कि विभिन्न शक्तियों के विभिन्न काम हैं। इन्सान बड़ी शक्तियां लेकर आया है और तरह तरह की सेवाएं उसकी पूर्णता के लिए हर एक शक्ति के सपुर्द हैं। अज्ञान फ़लसफ़ी हर बात का फ़ैसला अपनी विशेष बुद्धि से चाहता है ; हालाँकि यह बात सम्पूर्ण रूप से ग़लत है। ऐतिहासिक बातें तो इतिहास ही से प्रमाणित होंगी और चीज़ों के गुणों का अनुभव के बिना के कैसे लग सकेगा। क्यास की बातों का पता अक़ल देगी। इसी तरह पर अलग अलग तौर पर अलग अलग माध्यम हैं। इन्सान धोथा में पड़ कर चीज़ों की वास्तविकता के मालूम करने से तब ही वंचित हो जाता है जब कि वह एक ही चीज़ को विभिन्न मामलों की पूर्णता का माध्यम क़रार दे लेता है। मैं इस नियम की सच्चाई पर ज़्यादा कहना ज़रूरी नहीं समझता, क्योंकि ज़रा से फ़िक्र से यह बात ख़ूब समझ में आ जाती है और दैनिक हम इन बातों की सच्चाई को देखते हैं। अत: जब रूह जिस्म से अन्तर रखती है या सम्बन्ध पकड़ती है तो इन बातों का फ़ैसला अक़ल से नहीं हो सकता। यदि ऐसा होता तो फ़लसफ़ी और हुकमा अन्धकार में न पड़ते ।

रूह के बारे में नबुव्वत के चश्मा से ज्ञान मिलते हैं

इसी तरह पर क़बरों के साथ जो सम्बन्ध रूहूं का होता है। यह एक सच्चाई तो है परन्तु उसका पता देना इस आँख का काम नहीं। यह कश्फ़ी आँख का काम है कि वह दिखलाती है। यदि केवल अक़ल से इस का पता लगाना चाहो तो कोई अक़ल का पुतला इतना ही बतलाए कि रूह का वजूद भी है या नहीं? हज़ारों मतभेद इस मसला पर मौजूद हैं और हज़ारों फलासफर नास्तिक आदतों के मौजूद हैं जो इन्कार करने वाले हैं। यदि केवल अक़ल का यह काम था तो फिर मतभेद का क्या काम? क्योंकि जब आँख का काम देखना है, तो मैं नहीं कह सकता कि ज़ैद की आँख तो सफ़ेद चीज़ को देखे और बकर की वैसी ही आँख इस सफ़ेद चीज़ का ज़ायक़ा बतलाए। मेरा अभिप्राय यह है कि केवल अक़ल रूह का वजूद भी यक़ीनी तौर पर नहीं बतला सकती; कहां यह कि उसकी कैफ़ीयत और सम्बन्धों का इल्म पैदा कर सके। फिलासफर तो रूह को एक हरी लक्कड़ी की तरह मानते हैं और रूह अलग से उनके निकट कोई चीज़ ही नहीं। यह व्याख्या रूह के वजूद और इसके सम्बन्ध इत्यादि की नबुव्वत के स्रोत से मिली हैं और निरे अक़ल वाले तो दावा ही नहीं कर सकते। यदि कहो कि कई फिलासफरों ने कुछ लिखा है तो याद रखो कि उन्होंने नकल करते हुए नबुव्वत के स्रोत से लेकर कुछ लेकर कहा है। अत: जब यह बात प्रमाणित हो गई कि रूह के बारे में ज्ञान नबुव्वत के चश्मा से मिलते हैं तो यह बात कि रूहूं का क़बरों के साथ सम्बन्ध होता है, उसी चश्मा से देखना चाहिए और कशफ़ी आँख ने बताया है कि इस मिट्टी की शरीर से रूह का एक सम्बन्ध होता है और اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الْقُبُوْرِ कहने से उत्तर मिलता है। अत: जो आदमी इन शक्तियों से काम ले जिनसे कश्फ़ क़ुबूर हो सकता है वह इन सम्बन्धों को देख लेता है।

हम एक बात उदाहरण के तौर पर पेश करते हैं कि एक नमक की डली और एक मिस्री की डली रखी हो। अब सिर्फ अक्ल उन पर क्या फ़तवा दे सकेगी। हाँ यदि उनको चखेंगे तो दो अलग अलग मज़ों से मालूम हो जाएगा कि यह नमक है और वह मिस्री है, परन्तु यदि ज़बान की चखने की शक्ति ही नहीं तो नमकीन और मीठे का फ़ैसला कोई क्या करेगा? अत: हमारा काम सिर्फ तर्क से से समझा देना है। सूर्य के चढ़ने में जैसे एक अंधे के इन्कार से अन्तर नहीं आ सकता और एक बीमार के तर्कों से लाभ न उठाने से यह झुठलाया नहीं जा सकता । इसी तरह पर यदि कोई व्यक्ति कशफ़ी आँख नहीं रखता तो वह इस रूहूं के सम्बन्ध को कैसे देख सकता है? अत: उसके इन्कार से केवल इसलिए कि वह देख नहीं सकता, उसका इन्कार जायज़ नहीं है। ऐसी बातों का पता सिर्फ अक़ल और क़ियास से कुछ नहीं लगता। अल्लाह तआला ने इसलिए इन्सान को विभिन्न

पृष्ठ 1 का शेष

कोई हर्फ़ नहीं आ सकता। अत: बलप्रयोग अवैध है।

इस जगह से एक मसला निकलता है कि अपनी क़ौम के आदमी पर एक हद तक बलप्रयोग किया जा सकता है क्योंकि उसकी वजह से क़ौम बदनाम होती है। इसलिए उसके अधीन जब हम अपनी जमाअत के कुछ लोगों की ग़लती पर जुर्माना इत्यादि की सज़ा निर्धारित करते हैं तो कुछ नादान उसे पीर परस्ती क़रार देते और शोर मचाते हैं हालाँकि इस आयत से साबित है कि अपनी जमाअत के लोगों पर एक हद तक बलप्रयोग हो सकता है। उदाहरणता यदि कोई व्यक्ति अहमदी कहलाते हुए डाका मारने की वारदातें करता है या नमाज़ें छोड़ बैठता है तो चूँकि इस से सारी जमाअत की बदनामी होती है इस लिए हमारा हक़ है कि उस व्यक्ति को इस्लाह के लिए मजबूर करें। हाँ यदि वह अहमदियत से ही इंकार करके जुदा हो जाएगी या अपना कोई नया फ़िर्क़ा बना ले तो फिर हमारा उस पर कोई हक़ नहीं होगा। अर्थात اَنْتُمْ بَرِيْٓـُٔوْنَ مِمَّآ اَعْمَلُ में बताया है कि मेरे और तुम्हारे अलग-अलग गिरोह हैं। मेरे कामों की वजह से तुम पर इल्ज़ाम नहीं आएगा इस लिए जबर या फ़साद की कोई वजह नहीं है।

इस आयत के दूसरे अर्थ यह भी हैं कि मेरे और तुम्हारे कर्म बिल्कुल प्रतिष्ठित हैं। उनमें कोई मेल नहीं है। परिणाम स्वयं बता देगा कि किस के कर्म सही और ख़ुदा के समक्ष मक़बूल थे। पवित्र अमल, परस्पर समान होने की सूरत में सही तौर से नहीं कह सकते कि ख़राबी या तरक़्क़ी किस कारण से पैदा हुई। लेकिन जब कोई परस्पर समानता ही नहीं हो तो तुरंत पता लग सकता है कि परिणाम उस क़ौम के विशेष कर्मों का है। (तफ़सीर कबीर, भाग 3 पृष्ठ 82 प्रकाशन क़ादियान 2010)

☆ ☆ ☆ ☆

शक्तियां दी हैं। यदि एक ही सब काम देता तो फिर इतनी शक्तियों के प्रदान करने की क्या ज़रूरत थी? कई का सम्बन्ध आँख से है और कई का कान से, कई ज़बान से बारे में हैं और कई नाक से विभिन्न प्रकार की शक्तियां इन्सान रखता है। क़बरों के साथ रूहूं के सम्बन्ध के देखने के लिए कश्फ़ी क़ुव्वत और हिस्स की ज़रूरत है। यदि कोई कहे कि यह ठीक नहीं है तो वह ग़लत कहता है। अंबिया अलैहिमुस्सालम की एक बडी संख्या करोड़ों औलिया तथा वसुलहा का सिल्सिला दुनिया में गुज़रा है और कोशिशें करने वाले बेशुमार लोग हुए हैं और वे सब इस बात की ज़िन्दा गवाही हैं। यद्यपि उसकी वास्तविकता और सम्बन्धों की कारण अक़्ली तौर पर हम मालूम कर सकें या न, परन्तु नफ़्स सम्बन्ध से इन्कार नहीं हो सकता।

अत: कशफ़ी प्रमाण इन सारी बातों का फ़ैसला किए देते हैं। कान यदि देख न सकें तो उनका क्या क़सूर?वे दूसरी शक्ति का काम है। हम अपने ज़ाती अनुभव से गवाह हैं कि रूह का सम्बन्ध कबर के साथ ज़रूर होता है। इन्सान मुर्दा से बात कर सकता है रूह का सम्बन्ध आसमान से भी होता है,जहां उसके लिए एक स्थान मिलता है। मैं फिर कहता हूँ कि यह एक प्रमाणित सच्चाई है। हिंदुओं की किताबों में भी इस की गवाही मौजूद है। यह मसला आम तौर पर सर्वमान्य मसला है। केवल उस फ़िर्क़ा के जो रूह का इन्कार करता है और यह बात कि किस स्थान में सम्बन्ध है कशफ़ी शक्ति ख़ुद ही बतलाएगी। जियालोजिस्ट(भू विज्ञनी) बता देते हैं कि यहां अमुक़ धात है और वहां अमुक खान है। देखो उन में यह एक शक्ति होती है जो शीघ्र बतला देती है। अत: यह बात एक सच्ची बात है कि रूहूं का सम्बन्ध क़बरों से ज़रूर होता है। यहांतक कि अहले कशफ़ ध्यान से मुर्दा के साथ कलाम भी कर सकते हैं और वहमों और आरोपों का सिलसिला तो ऐसा लम्बा है कि ख़त्म ही नहीं होता।

(मल्फ़ूज़ात,भाग प्रथम पृष्ठ 262 से 271 प्रकाशन क़ादियान 2018)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad